तरुण छत्तीसगढ़

e-Paper- tarunchhattisgarhkorba.com

कोरबा एवं रायपुर से एक साथ प्रकाशित डाक पंजीयन क्रमांक- जी2-112/सी.जी/बीएलपी/003/2024-2026

सुनालिया ज्वेलर्स
हीरा, स्वर्ण, हॉलमार्क ज्वेलरी, रजत, राशि नग के विक्रेता
मो. 94255-32524,94241-43922
पावर हाउस रोड, कोरबा

वर्ष 35 अंक 272 | कोरबा, मंगलवार, दिनांक 02 जुलाई 2024 डाक 03 जुलाई 2024 | पृष्ठ : 8 मूल्य 2.00 रुपए

विविधा
आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने नई दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया

देश-विदेश
असम में बाढ़ से बदतर हुए हालात, 6 लाख से अधिक लोग प्रभावित, भारी बारिश की चेतावनी जारी

फीचर पेज
यहां के तांत्रिक गुरु उड़ने वाले घोड़े की सवारी करते थे, भगवान राम के चरणधूलि का सिद्ध स्थल घघरा सीतामढ़ी

जो करते थे किसी को लाने का दावा, वो खुद हैं लाचार

लोकसभा में अखिलेश का बीजेपी पर तंज

नईदिल्ली, 02 जुलाई [एजेंसी]।

18वीं लोकसभा के पहले संसद सत्र के सातवें दिन मंगलवार को समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और सांसद अखिलेश यादव ने अपनी बात रखी। अखिलेश ने सदन में बोलते हुए बीजेपी सरकार पर जमकर हमला बोला। पेपर लीक मुद्दा, अयोध्या, जाति जनगणना, एमएसपी, ओपीएस, अग्निवीर योजना जैसे कई मुद्दों पर अखिलेश ने बीजेपी सरकार को घेरा। यूपी का जिक्र करते हुए कहा कि जुमला बनाने वालों से विश्वास उठ गया। सपा प्रमुख ने पेपर लीक मामले को लेकर भी सरकार पर सवाल उठाए। कहा कि यूपी में परीक्षा माफिया का जन्म हुआ है। अखिलेश ने कहा कि जो किसी को लाने का दावा करते थे, वो खुद लाचार हैं। लोकसभा में पेपर लीक मुद्दे पर बोलते हुए समाजवादी पार्टी के सांसद अखिलेश यादव ने कहा, पेपर लीक क्यों हो रहे हैं। सच तो यह है कि सरकार ऐसा इसलिए कर रही है ताकि उसे युवाओं को नौकरी न देनी पड़े।

ईवीएम पर समाजवादी पार्टी के सांसद अखिलेश यादव ने कहा, ...ईवीएम पर मुझे कल भी भरोसा नहीं था, आज भी नहीं है भरोसा, मैं 80/80 सीटें जीत जाऊं तब भी नहीं भरोसा... ईवीएम का मुद्दा खत्म नहीं हुआ है। अखिलेश न कहा कि यहां हारी हुई सरकार विराजमान है। ये चलने वाली नहीं गिरने वाली सरकार है। आवाम ने हुकूमत का गुरूर तोड़ा जनता कह रही, सरकार गिरने वाली है। संविधान रक्षकों की जीत हुई है।

एनडीए संसदीय दल की बैठक खत्म, अपने मुद्दे प्रभावी ढंग से उठाएं सांसद : पीएम

नईदिल्ली, 02 जुलाई [एजेंसी]।

आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव की चर्चा का जवाब दे सकते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने आज पहली बार एनडीए के सांसदों को संबोधित किया और बैठक की। वहीं, एक दिन पहले, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भगवान शिव का चित्र दिखाते हुए सत्ता पक्ष को आड़े हाथों लिया था बीजेपी ने गांधी के भाषण में किए गए कई दावों को चुनौती दी है और अध्यक्ष ओम बिरला से कार्रवाई की मांग की है। एनडीए संसदीय दल की बैठक के बाद संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा, पीएम ने एक और आग्रह किया है। हर सांसद को अपने परिवार के साथ प्रधानमंत्री संग्रहालय आना चाहिए...प्रधानमंत्री संग्रहालय में पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक के सफर को बहुत ही सुंदर तरीके से दिखाया गया है। इसमें कोई राजनीतिक एजेंडा नहीं है...यह पहला ऐसा प्रयास है कि पूरा देश हर प्रधानमंत्री के योगदान को जाने, उसकी सराहना करे, उससे सीखे और उन्हें श्रद्धांजलि दे। एनडीए संसदीय दल की बैठक खत्म हो गई है। बैठक में तमाम बड़े नेता और सांसद मौजूद रहे। इसके बाद पीएम ने बैठ की अध्यक्षता की। भाजपा वर्ष 2014 के बाद से अकेले दम पर बहुमत में नहीं है और वह सरकार के फैसलों के लिए अपने गठबंधन के अन्य घटक दलों पर निर्भर है।

पीएम ने एनडीए सांसदों से संसदीय नियमों का पालन करने को कहा है। साथ ही उन्होंने अपने मुद्दे प्रभावी ढंग से उठाने को भी कहा। संसद परिसर में एनडीए संसदीय दल की बैठक के लिए पीएम नरेंद्र मोदी पहुंचे। दिल्ली में एनडीए संसदीय दल की बैठक में एनडीए नेताओं ने पीएम मोदी का स्वागत किया।

बारबाडोस में मौसम साफ, लॉकडाउन भी हटा, अब उड़ान भरेगी टीम इंडिया

बारबाडोस। टी20 विश्व कप जीतने के बाद टीम इंडिया की वतन वापसी में देरी हुई। कारण रहा बारबाडोस का मौसम। चक्रवाती तूफान के कारण बारबाडोस का एयरपोर्ट बंद था और टीम इंडिया होटल में रुकी रही। बारबाडोस का मौसम साफ हो गया है। भारतीय टीम मंगलवार शाम 6 बजे बारबाडोस से दिल्ली के लिए चार्टर्ड प्लेन से रवाना होगी। बीसीसीआई ने विशेष विमान की व्यवस्था कर दी है। करीब 3 लाख की आबादी वाले बारबाडोस की सरकार ने रविवार की रात आठ बजे से ही लॉकडाउन लगा दिया था। इसके बाद से सब अपने घरों और होटलों के अंदर थे। कल दोपहर को जब तूफान शांत हुआ तो सरकार ने लॉकडाउन हटाया।

राहुल गांधी के सपोर्ट में उतरी आरजेडी, अब सनातन पर बयान देकर बिहार में फोड़ा नया सियासी बम

पटना, 02 जुलाई [एजेंसी]।

कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के बयान को लेकर देश भर में सियासत तेज है। राहुल गांधी के संसद में दिए गए भाषण का राष्ट्रीय जनता दल ने समर्थन किया है। राजद ने कहा कि राहुल गांधी ने भाजपा को बिल्कुल सही आईना दिखाया है। राजद ने आगे कहा कि सनातन का काम किसी को डराना और धमकाना नहीं बल्कि सौहार्द का वातावरण बनाना होता है, लेकिन भाजपा का काम समाज में डर और भय का माहौल बनाना मात्र है। संसद में राहुल गांधी के भाषण का जिक्र करते हुए राजद के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव ने मंगलवार को कहा कि भाजपा जिस सनातन, हिन्दू की बात करती है, वह न तो सनातन है न ही हिन्दू। हिन्दू और सनातन का काम सबको साथ लेकर चलना है, लेकिन इसके ठीक उलट भाजपा के लोग नफरत फैलाते हैं।

राजद ने यह भी कहा कि भाजपा के लोग भय का माहौल बनाते हैं, लोगों को डराने-धमकाने का प्रयास करते हैं। यह कभी भी हिंदू संस्कृति नहीं हो सकती, हमारे महापुरूषों ने ऋषियों ने सबको साथ लेकर चलने के साथ सत्यमार्ग पर चलने की सीख दी।शक्ति सिंह यादव ने कहा कि राहुल गांधी ने भी पार्लियामेंट के अंदर यही बात कही है, लेकिन उनके भाषण से भाजपा के लोगों को मिर्ची लग गई। क्योंकि भाजपा को लगता है कि वह हिंदुओं का ठेकेदार है। उन्होंने कहा कि आप हिंदुओं का ठेकेदार कैसे हो सकते हैं।

अतीक के दोनों बेटे उमर और अली साजिश के दोषी, पुलिस ने कोर्ट में फाइल की चार्जशीट

प्रयागराज, 02 जुलाई [एजेंसी]।

बहुचर्चित उमेश पाल हत्याकांड में पुलिस ने माफिया अतीक के बेटे उमर और अली के खिलाफ भी कोर्ट में चार्जशीट फाइल कर दी है। मुकदमे की विवेचना के दौरान पुलिस ने दोनों भाईयों को हत्याकांड की साजिश में शामिल होने का दोषी पाया है।

इसी आधार पर उनके विरुद्ध अदालत में आरोप पत्र पेश किया गया है। देवरिया जेल कांड के मामले में उमर लखनऊ जेल में बंद है, जबकि अली अहमद रंगदारी के मामले में नैनी जेल में है। इससे पहले मुकदमे के विवेचक ने जेल जाकर दोनों भाईयों का बयान दर्ज किया था।

अली ने पांच लाख के इनामी बमबाज गुड्डू मुस्लिम को गद्दार बताते हुए अपने अब्बा व चाचा की कारस्तानी को उजागर किया था। वहीं, उमर ने भी षडयंत्र में शामिल होने की बात स्वीकार की थी। नैनी जेल में अली से शूटरों के मिलने का सीसीटीवी फुटेज भी पुलिस को मिला था। धूमनगंज थाना क्षेत्र के जयंतीपुर में 24 फरवरी 2023 की शाम उमेश पाल और उनके दो सरकारी गनर की गोली, बम मारकर हत्या कर दी गई थी। उमेश पाल की पत्नी जया पाल की तहरीर पर धूमनगंज पुलिस ने माफिया अतीक, उसके भाई अशरफ, बीवी शाइस्ता समेत अन्य के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था।

एक लाख का इनामी कुख्यात अपराधी ढेर, एके-47 और पिस्टल बरामद

जौनपुर, 02 जुलाई [एजेंसी]।

यूपी के जौनपुर में बदलापुर के शाहपुर गोशाला के पास मंगलवार की भोर में हुई मुठभेड़ में एक बदमाश ढेर हो गया। उसके साथी अंधेरे का फायदा उठाकर भागने में सफल हो गए।

मृत बदमाश की शिनाख्त मऊ जिले के सरायलखंसी के नरई इमिलिया निवासी कुख्यात 35 वर्षीय सुमित कुमार सिंह उर्फ मोनू चवन्नी के रूप में हुई। उस पर एक लाख रुपए का पुरस्कार घोषित था। मिले सुराग पर एसटीएफ, बदलापुर थाना व स्वाट की संयुक्त टीम वाराणसी लखनऊ राष्ट्रीय राजमार्ग पर बदलापुर के सरोखनपुर में मुस्तैदी से संदिग्ध वाहनों व व्यक्तियों की चेकिंग में जुट गई।

इसी दौरान आई तेज रफ्तार बोलेरो को रुकने का संकेत दिया। उस पर सवार बदमाश पुलिस टीम पर गोलियां चलाते हुए शाहगंज मार्ग पर भागने लगे। पुलिस टीम ने पीछा कर लिया। करीब चार किलोमीटर दूर शाहपुर में पीली नदी पुल से बदमाशों ने बोलेरो दुगौली खुर्द की तरफ मोड़ दिया। शाहपुर में ही गोशाला के पास बोलेरो मिट्टी में फंस गई। घिर जाने पर बदमाश बोलेरो से उतरकर पुलिस टीम पर फायरिंग करते हुए भागने लगे।

जवाबी फायरिंग में एक बदमाश सिर में गोली लगने से धराशायी हो गया। उसके साथी भागने में सफल हो गए। मौके पर पुलिस को एके-47 राइफल, नाइन एमएम की पिस्टल, खोखे व कारतूस मिले हैं। पुलिस घायल बदमाश को जिला अस्पताल ले गई, डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस शिनाख्त के बाद कुख्यात सुमित कुमार सिंह उर्फ मोनू चवन्नी का आपराधिक इतिहास जुटा रही है।

केन्या में हिंसक हुआ कर व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन

विरोध प्रदर्शन में 39 लोगों की मौत

नैरौबी। केन्या में नई कर वृद्धि के खिलाफ हिंसक विरोध प्रदर्शन हो रहा है। अबतक इस हिंसा में कम से कम 39 लोगों की मौत हो गई है। एक मीडिया रिपोर्ट में राष्ट्रीय अधिकारों की निगरानी का हवाला देते हुए बताया कि प्रदर्शनकारियों ने केन्या में इस सप्ताह एक नए दौर के विरोध प्रदर्शन के लिए कमर कस ली है। केन्या नेशनल कमीशन ऑन ह्यूमन राइट्स (केएनसीएचआर) के रिकॉर्ड के मुताबिक केन्या में देशव्यापी कर कानून के विरोध प्रदर्शनों के संबंध में 39 लोग मारे गए हैं और 361 घायल हुए हैं। इसके अलावा जबरन गायब होने के 32 मामले दर्ज हुए हैं। वहीं 627 प्रदर्शनकारियों की इसमें गिरफ्तारियां भी हुई हैं। वहीं इस विधेयक पर केन्या के संसद में मौजूद सभी सांसदों ने इसका समर्थन किया है। उनका मानना है कि यह सरकारी कामों को पूरा करने के लिए जरूरी है। रेवेन्यू बढ़ाने पर होने वाली कमाई के जरिए सरकार देश में सड़कों का निर्माण, स्कूलों में टीचर्स को हायर कर सकेगी।

अनाथ आश्रम में दो बच्चों की मौत 10 अन्य बीमार, खून में संक्रमण की आशंका

इंदौर, 02 जुलाई [एजेंसी]।

शहर के एक अनाथ आश्रम में दो बच्चों की दो दिन में मौत हो गई। यह आश्रम शहर के मल्हारगंज क्षेत्र में स्थित है। पता चला है कि यहां युगपुरुष धाम आश्रम में रह रहे 12 बच्चों की सोमवार को अचानक तबीयत खराब होने के बाद इन्हें चाचा नेहरू अस्पताल में भर्ती कराया गया था।इसके बाद एक बच्चे की मौत रात में हुई। दूसरे बच्चे ने मंगलवार सुबह दम तोड़ दिया। बच्चों की मौत की सूचना पर इंदौर कलेक्टर आशीष सिंह चाचा नेहरू अस्पताल पहुंचे। जानकारी मिली है कि बच्चों के खून में संक्रमण के कारण तबीयत बिगड़ी है। बच्चों को एमवाय अस्पताल से चाचा नेहरू अस्पताल उपचार के लिए रेफर किया गया। आश्रम में मप्र के अलग-अलग जिलों से लाए गए बच्चों को रखा गया है। मल्हारगंज पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 12 वर्षीय करण की सोमवार को अस्वस्थ होने के बाद मौत हो गई। इसके बाद आज सुबह सात वर्षीय आकाश नामक बच्चे की भी मौत हो गई। बच्चों की मौत के बाद पुलिस भी इस मामले की जांच कर रही है।

बच्चों की मौत के बाद आश्रम प्रबंधन ने बाल कल्याण समिति को पत्र लिखकर मामले की जानकारी दी है। इंदौर कलेक्टर के अनुसार बच्चों की मौत डायरिया अथवा डिहाइड्रेशन और मिर्गी जैसी बीमारी से होने की आशंका है, लेकिन पूरी जांच के बाद ही स्पष्ट कारण पता चल सकेगा।

तेंदुए ने बस स्टैंड के पास मचाया उत्पात

कांकेर, 02 जुलाई [एजेंसी]।

भानुप्रतापपुर बस स्टैंड के पास आज सुबह एक तेंदुआ दिखने से लोगों में हड़कंप मच गया है। तेंदुआ एक घर के आम पेड़ पर घंटों से बैठा हुआ है। शहर में तेंदुए के आने की खबर से इलाके में अफरा-तफरी मच गई है। इसकी सूचना पर वन विभाग और पुलिस की टीम मौके पर पहुंच गई है।

वहीं आसपास के लोगों को घरों के अंदर रहने की हिदायत दी जा रही है। पेड़ पर बैठे तेंदुए का वीडियो भी सामने आया है। जिसमें देखा जा सकता है कि तेंदुआ कितने आराम से बैठा हुआ है। भानुप्रतापपुर जंगलों से घिरा हुआ है। ऐसे में जनगली जानवरों का शहर में आना आम बात है। कई बार शहरी क्षेत्र में भालू में घूमते पाए गए हैं। लेकिन पहली बार ऐसा है कि शहर के बीचों बीच तेंदुआ पहुंचा है।

50 लोग डायरिया की चपेट में, बच्चे भी ग्रसित

बिलासपुर । सकरी के अटल आवास में डायरिया का प्रकोप फैल गया है। यहां रहने वाले करीब 50 से अधिक लोग उल्टी-दस्त से पीड़ित हैं। इलाके में साफ-सफाई का अभाव और गंदा पानी पीने से लोग बीमार पड़ रहे हैं। इसकी सूचना पर स्वास्थ्य विभाग की टीम कैंप लगाकर मरीजों का इलाज कर रही है। बारिश आते ही डायरिया पैर पसारने लगा है और नलों से आ रहे गंदा पानी पीने से लोगों की तबियत बिगड़ रही है। सकरी क्षेत्र के 50 से अधिक लोग डायरिया के चपेट में आ चुके हैं। एक ही परिवार के 3 से 4 लोगों को उल्टी और दस्त की समस्या रही है, लेकिन बच्चों की हालत ज्यादा खराब हो रही है।

दिल्ली के रिंग रोड पर हादसा, सुबह-सुबह पलटी डीटीसी बस, बाल बाल बचे 15 यात्री

नईदिल्ली, 02 जुलाई [एजेंसी]।

कीर्ति नगर इलाके में रिंग रोड पर मंगलवार तड़के डीटीसी की एक बस अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकराने के बाद पलट गई। हादसे में बस में सवार एक यात्री को चोट लगी है। पुलिस ने बस को कब्जे में कर मामले की छानबीन कर रही है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि मंगलवार तड़के 3.40 बजे डीटीसी बस रूट नंबर 763 की बस आईएसबीटी से उत्तम नगर की ओर जा रही थी।

कीर्ति नगर इलाके रिंग रोड पर बस डिवाइडर से टकराने के बाद पलट गई। सूचना मिलने के बाद पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची, तब तक सभी यात्री बस से बाहर निकल गए थे। पुलिस के मुताबिक एक यात्री को मामूली चोटें आई है। घटना के समय बस में करीब 15 यात्री सवार थे।

स्किन केयर व कास्मेटोलाजी क्लिनिक

चर्म , गुप्त, कुष्ठ रोग विशेषज्ञ एवं सैक्स सलाहकार

डॉ.आर.के.अग्रवाल
M.B.B.S.D.V.D.FDS (Lond.)F.i.a.m.s.(Ind.)
Mob.9424170010

-: परामर्श का समय :-
सुबह 10.30 से 1.30
(शाम को बंद)

डॉ.शशि अग्रवाल
M.B.B.S.D.V.D.(U.K)
Mob.9826389894

सुविधायें:- गंजापन, मस्से हटाना, दाद खाज खुजली, एक्जीमा, एलर्जी, सड़े नाखून, कुष्ठ रोग, काले दाग, मुंहासे, बाल झड़ना, सेक्स की कमी, शीघ्र पतन, धात, मानसिक रोगों का मशीनों व अत्याधुनिक दवाओं द्वारा शीघ्र ईलाज, फोटोथेरेपी, इलेक्ट्रीशिकेशन, क्रायोसर्जरी, सायकोथेरेपी का ईलाज।

मो. 9203907928,9826389894 (क्लीनिक)

विशेष : बुधवार को 20 मरीजों का फीस माफ...

पता : एचआईजी -4 नेहरू नगर , रिकाण्डो रोड घोड़ा चौक , बुधवारी बाजार के पास, कोरबा

करनाल में ट्रेन हादसा: चलती मालगाड़ी से सात कंटेनर गिरे, ट्रैक व बिजली लाइन टूटी, अमृतसर रेल सेवा प्रभावित

करनाल, 02 जुलाई [एजेंसी]।

करनाल के तरावड़ी रेलवे स्टेशन पर अंबाला से दिल्ली की ओर जा रही रन थ्रू मालगाड़ी के पिछली बोगी के पहिए ट्रैक से उतर गए। जिसके कारण मालगाड़ी से सात कंटेनर ट्रैक पर गिर पड़े। सात कंटेनरों में से एक कंटेनर ओएचई पिलर से टकरा गया। जिससे ओएचई लाइन टूट गई और रेलवे ट्रैक बाधित हो गया। हादसे की सूचना के बाद करनाल जीआरपी और आरपीएफ की टीम में घटना स्थल पर पहुंची।

मिली जानकारी के अनुसार सुबह चार बजे डाउन ट्रैक अंबाला से दिल्ली की ओर खाली कंटेनरों से लदी मालगाड़ी जा रही थी। जब मालगाड़ी तरावड़ी रेलवे स्टेशन से गुजर रही थी तो मालगाड़ी की पिछली बोगी के पहिए ट्रैक से नीचे उतर गए। मालगाड़ी की रफ्तार इतनी तेज थी कि ट्रैक से पहिए उतरने के बाद भी ट्रेन करीब डेढ़ किलोमीटर बाद रुकी। जिस कारण पिछली चार बोगियों से सात कंटेनर उछलकर रेलवे ट्रैक पर जा गिरे। इनमें से एक कंटेनर ओएचई लाइन के पिलर से जा टकराया। जिससे दोनों अप-डाउन ट्रैक की ओएचई लाइन टूट गई और ट्रैक बाधित हो गया। हादसा होने के बाद सूचना जीआरपी और आरपीएफ थाना प्रभारी को दी गई। इसके तुरंत बात करनाल से दोनों टीम में तरावड़ी रेलवे स्टेशन पर पहुंची। इसी दौरान एक अज्ञात ट्रक ड्राइवर ने डायल 112 को फोन कर हादसे की सूचना दी।

इसके बाद स्थानीय पुलिस भी रेलवे स्टेशन पर पहुंची। रेलवे प्रशासन द्वारा रेलवे ट्रैक से कंटेनरों को हटाने के लिए एक हाइड्रा मंगवाई गई है। जिससे कंटेनरों को ट्रैक से हटाया गया। कंटेनरों को ट्रैक से हटाने के बाद ओएचई लाइन को दुरुस्त करने का काम शुरू किया गया। अभी फिलहाल दोनों ट्रैक पर ट्रेनों की आवाजाही बंद की गई है। रोजाना की तरह दैनिक यात्री तरावड़ी रेलवे स्टेशन पर पहुंचे, लेकिन हादसा होने की वजह से रेल यात्रियों को बसों की ओर दौड़ना पड़ा। रेलवे अधिकारी के अनुसार अभी फिलहाल ट्रैक बंद है। ट्रैक शाम तक ही दुरुस्त होने की संभावना है।

शिक्षा हमारे जीवन की सबसे बड़ी धरोहर है:श्रम मंत्री

कोरबा। वाणिज्य, उद्योग एवं श्रम मंत्री श्री लखन लाल देवांगन ने आज पाली विकासखंड के ग्राम नोनबिर्रा में शाला प्रवेश उत्सव कार्यक्रम के अवसर पर आयोजित समारोह में उपस्थित बच्चों को देश का बेहतर नागरिक बनने और प्रतिदिन स्कूल आकर पढ़ाई करने का आव्हान किया। उन्होंने कहा कि शासन की मंशा है कि सभी विद्यार्थी शिक्षा अर्जन कर बेहतर नागरिक बनें। शिक्षा हमारे जीवन की सबसे बड़ी धरोहर है, जिसका बंटवारा नहीं किया जा सकता। शिक्षा से ही देश की प्रगति होती है। घर का एक व्यक्ति शिक्षित होने पर परिवार जागरूक और शिक्षित होता है।

मुख्य अतिथि श्री देवांगन ने उपस्थित ग्रामीणों से अपने बच्चों को स्कूल भेजने तथा बच्चों की पढ़ाई लिखाई में स्वयं रूचि लेते हुए बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए अधिक से अधिक प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने शासन की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी बाजपेयी ने सर्व शिक्षा अभियान प्रारंभ कर दूरस्थ क्षेत्रों के बच्चों को शिक्षा से जोड़ा। हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा नई शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा के विकास को बढ़ावा दिया गया है। उन्होंने कहा कि माता-पिता को अपने बच्चों को पढ़ाई-लिखाई के लिए प्रेरित करना चाहिए एवं शिक्षा में किसी प्रकार की बाधा नहीं आने देना चाहिए। उन्होंने बालक एवं बालिकाओं को शाला में लाने एवं शाला में निरंतर बनाये रखने में सहयोग प्रदान करने की अपील ग्रामीणों से की।

मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक होता है तथा बेहतर नागरिक बन पाता है। उन्होंने कहा कि शासन का लक्ष्य है कि कोई भी बच्चा स्कूल न छोड़े, उनकी नियमित उपस्थिति बनी रहे एवं उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो। हम सबको मिलकर प्रत्येक बच्चे को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दिलाने में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करना चाहिए जिससे प्रत्येक बच्चा शिक्षा के माध्यम से समग्र रूप से विकसित होकर उज्जवल भविष्य की मंजिल पा सके। उन्होंने कहा कि जिले के सभी शाला जाने योग्य बच्चे शाला में नामांकित हों तथा अपनी शिक्षा पूर्ण कर सकें इस हेतु जागरूकता एवं निष्ठापूर्वक प्रयास किया जाना जरूरी है। मंत्री श्री देवांगन ने कोरबा जिले में विद्यार्थियों को आगे बढ़ाने शुरू की गई कोचिंग की व्यवस्था, स्कूलों में रिक्त शिक्षकों के पदों पर पहाड़ी कोरवाओं सहित विषय विशेषज्ञ शिक्षकों की भर्ती का जिक्र करते हुए कहा कि इससे जिले में शिक्षा का बेहतर माहौल बनेगा। उन्होंने मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे कल्याणकारी कार्यों को बताते हुए श्रम विभाग द्वारा श्रमिकों के बच्चों की शिक्षा के लिए संचालित योजनाओं की जानकारी दी और ग्रामीणों से इसका लाभ उठाने की अपील की। इस अवसर पर मंत्री श्री देवांगन ने मुख्यमंत्री द्वारा शाला प्रवेशोत्सव के संबंध में दिए गए संदेश का वाचन भी किया। कार्यक्रम में उपस्थित विधायक कटघोरा श्री प्रेमचंद पटेल, विधायक पाली-तानाखार श्री तुलेश्वर सिंह मरकाम ने कहा कि शासन द्वारा बच्चों को स्कूल पहुंचने में सुविधा व अपनी पढ़ाई भली-भांति पूरी कर सकें इसके लिए रूचिकर मध्यान्ह भोजन, नि:शुल्क किताबें, गणवेश वितरण, नि:शुल्क साइकिल आदि तरीकों से बच्चों की रूचि बढ़ाने व जरूरतमंद पालकों को राहत देने का इंतजाम भी किया जाता है। शाला प्रवेश उत्सव अभियान के जरिये इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि दाखिला लेने वाले बच्चों की पढ़ाई बीच में न छुटे तथा एक भी बच्चा शिक्षा से वंचित न हो। विधायक श्री पटेल ने विद्यार्थियों के लिए परिवार को प्रथम पाठशाला बताते हुए अभिभावकों को अपने बच्चों पर विशेष ध्यान देने की बात कही। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी जीवन अपनी प्रतिभा को निखारने का और आगे बढ़ने का समय होता है। उन्होंने सिर्फ नौकरी ही नहीं हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए शिक्षा को महत्व देने की अपील की। प्रवेश उत्सव कार्यक्रम में कलेक्टर श्री अजीत वसंत ने कहा कि शाला प्रवेशोत्सव का अवसर नए सपनों को लेकर आता है। उन्होंने अच्छे नागरिक के निर्माण के लिए शिक्षा को आवश्यक बताया। इसके साथ ही बच्चों के भविष्य निर्माण में शिक्षकों की भी बड़ी जिम्मेदारी होने की बात कही। कलेक्टर ने जिले में शिक्षा के विकास को बढ़ावा देने नीट सहित अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग हेतु जिले के विद्यार्थियों को बाहर भेजने, स्कूलों में रिक्त पदों के विरूद्ध शिक्षकों की नियुक्ति करने की जानकारी देते हुए कहा कि आने वाले समय में स्कूलों में जो भी रिक्त पद हैं उसे भी पूर्ण कर लिया जाएगा। इससे शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ ही जिले के युवाओं को रोजगार भी प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि अपने अधिकारों को जानने और देश के विकास में योगदान देने में शिक्षा का बड़ा योगदान है। विद्यार्थियों के माता-पिता से अपील है कि वे अपने बच्चों को जहां तक वो चाहे उनके साथ खड़े रहें। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नोनबिर्रा के प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा नव प्रवेशी छात्र-छात्राओं को तिलक लगाकर व मिष्ठान खिलाकर शाला में प्रवेश दिया गया। नव प्रवेशी छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क गणवेश, स्कूल बैग, पाठ्य पुस्तक व अन्य अध्ययन सामग्री वितरित की गई। इस अवसर पर न्योता भोज का आयोजन भी किया गया। सभी अतिथियों ने विद्यार्थियों के साथ बैठकर भोजन किया और उन्हें शिक्षा हेतु प्रेरित किया। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती शिवकला कंवर, सभापति जनप्रतिनिधिगण, प्रेस प्रतिनिधि, छात्र-छात्राएं, पालकगण तथा बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

कलेक्टर ने जनचौपाल में सुनी आम नागरिकों की समस्याएं

कोरबा । कलेक्टर अजीत वसंत ने आज जन चौपाल में लोगों की समस्याओं को गंभीरता से सुना। उन्होंने प्रकरण अनुसार संबंधित अधिकारियों को आवेदन प्रेषित करते हुए नियमानुसार निराकरण के निर्देश दिए हैं। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित जन चौपाल में लोगों ने अलग-अलग समस्याओं के निराकरण हेतु आवेदन दिया। जनचौपाल में कुल 51 आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्टर जनचौपाल में हरदीबाजार के ग्रामीणों ने क्षेत्र में सिटी बस संचालन की मांग की। जनचौपाल में अतिक्रमण हटाने, आंगनबाड़ी केंद्र संचालित करने, बैंक से लोन, सीमांकन कराने तथा छात्रावास में एडमिशन कराने सहित अन्य आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्टर श्री अजीत वसंत ने सभी आवेदनों को संबंधित अधिकारियों को प्रेषित कर निर्देशित किया है कि आवेदनों का परीक्षण कर शासन के नियमानुसार कार्यवाही समय सीमा सुनिश्चित करें। उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया है कि जनचौपाल में प्राप्त होने वाले आवेदनों पर समुचित कार्यवाही सुनिश्चित की जाए ताकि आवेदक को दोबारा जनचौपाल में ना आना पड़े। इस दौरान जिला पंचायत सीईओ श्री संबित मिश्रा, अपर कलेक्टर श्री दिनेश कुमार नाग सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

प्रेस जनता व सरकार का आइना विकास में महत्वपूर्ण योगदान:लखन

प्रेस क्लब के नव निर्वाचित पदाधिकारियों को श्रम मंत्री ने दिलाई शपथ

कोरबा। कोरबा प्रेस क्लब के नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह में मुख्य अथिति के रूप में छत्तीसगढ़ शासन के वाणिज्य, उद्योग और श्रम मंत्री श्री लखन लाल देवांगन शामिल हुए। इस अवसर पर मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि कोरबा प्रेस क्लब ने अपनी अलग पहचान बनाई है। चुनाव एक मात्र प्रक्रिया होती है। हर संगठन को चलाने के लिए मुखिया की जरूरत होती है। चुनाव में जीत-हार लगी रहती है। प्रेस जनता का आइना होता है। मीडिया सरकार की विभिन्न योजना को जन जन तक पहुंचाता है।

मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि महापौर के कार्यकाल में प्रेस क्लब के भवन का निर्माण हुआ था। कोरबा की जनता ने अब मंत्री और विधायक का दायित्व सौंपा है। उन्होंने कहा की बहुत सारे कार्य 6 महीना मे पूरे हो चुके हैं। मंत्री श्री देवांगन ने 10 लाख की लागत से प्रेस कॉम्प्लेक्स में प्रसाधन निर्माण करने की घोषणा की। मंत्री श्री देवांगन ने कहा की पूरा कोरबा में विकास की बहुत सारी संभावना है। मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि आप लोगों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर कोरबा का विकास किया जाएगा। उन्होंने पत्रकारों को हरसंभव मदद करने का भरोसा दिलाया। इससे पहले उन्होंने कोरबा प्रेस क्लब, कोरबा के द्विवर्षीय प्रबंध कार्यकारिणी के नवनिर्वाचित पदाधिकारी अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जायसवाल, उपाध्यक्ष श्री रामेश्वर ठाकुर, सचिव श्री नागेन्द्र श्रीवास, उप सचिव श्री रघुनंदन सोनी, कोषाध्यक्ष श्री ई. जयन व कार्यकारिणी सदस्य सर्वश्री राजकुमार शाह, शेख असलम व नीलम पड़वार को शपथ दिलाई। इस अवसर पर पार्षद श्री नरेंद्र देवांगन ने भी पत्रकारों को संबोधित किया। उन्होंने कहा की कोरबा के पत्रकार जागरूक और एकजुट हैं। आज पत्रकार अपने कलम की ताकत से हर वर्ग को सरकार की योजना का लाभ दिलाने में सशक्त भूमिका निभा रहा है। मीडिया प्रभारी श्री आकाश श्रीवास्तव उपस्थित थे। कार्यक्रम में कोरबा प्रेस क्लब के सर्वसम्मानीय सदस्यगण बड़ी संख्या में शामिल हुए। शपथ ग्रहण समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर पहुंचे मंत्री श्री लखनलाल देवांगन को पुष्प गुच्छ भेंट करके कोरबा प्रेस क्लब के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जायसवाल व सचिव श्री नागेन्द्र श्रीवास ने उनका स्वागत किया। प्रबंध कार्यकारिणी के अन्य सभी पदाधिकारियों ने भी पुष्प देकर मंत्री श्री देवांगन व पार्षद श्री नरेंद्र देवांगन का स्वागत किया। कार्यक्रम के अंत में प्रेस क्लब के सभी वरिष्ठ सदस्यों द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट करके उनका सम्मान किया और आभार व्यक्त किया।

इस दौरान मंत्री श्री देवांगन के निज सचिव श्री नरेंद्र पाटनवार व जिले के वरिष्ठ पत्रकार छेदीलाल अग्रवाल, कमलेश यादव, विजय खेत्रपाल, प्रेमचंद जैन, वेद प्रकाश मित्तल, दीपक जैन, रवि पी सिंह, सुशील दास, रफीक मेमन, दिलीप अग्रवाल, मनोज ठाकुर, अनिमेश सरकार, संदीप केशरवानी, मनोज पाहुजा, नरेंद्र मेहता, राजेंद्र गुप्ता, आकाश शर्मा, राजेंद्र मेहता, वैभव शर्मा, सुखसागर मन्नेवार, दीपक साहू, दिनेश राज, कैलाश यादव, राजीव प्रजापति, उमेश यादव, राजेश प्रजापति, योगेंद्र, संजय देवांगन, शैलेष अग्रवाल, मधुसुदन यादव, विक्की निर्मलकर, दीपक गुप्ता, रमेश यादव, रमेश वर्मा, बीता चक्रवर्ती, राजश्री गुप्ते, विजय सिंह, रमेश राठौर, निर्मला शर्मा, आशा सिंह, निर्मला राठौर, प्रतिमा सरकार, भगवती भंडारी, रेणु जायसवाल, अश्वनी मिश्रा, कैलाश ठाकुर, श्रवण साहू, मधु डिडवानिया, इंद्रजीत सिंह, हीरा राठौर प्रीतम जायसवाल, विमल मित्तल, युधिष्ठिर राजवाड़े, राजा मुखर्जी, जीतू हठेल, उमेश मकवाना, अंकित सिंह, संजीत सिन्हा सहित बड़ी संख्या में जिले के पत्रकार व गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिक के रिक्त पदों हेतु दावा-आपत्ति 07 जुलाई तक आमंत्रित

कोरबा। एकीकृत बाल विकास परियोजना कटघोरा अंतर्गत आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के 01 एवं सहायिका के 07 रिक्त पदों हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किये गये थे जिसकी जांच एवं परीक्षण उपरांत अनन्तिम मूल्यांकन पत्रक जारी कर दिया गया है, जिसे परियोजना कार्यालय तथा नगर पालिका/ग्राम पंचायत के सूचना पटल पर देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त मूल्यांकन पत्रक संबंधित वार्ड/ग्राम के पार्षदगणों/ग्राम पंचायत के सरपंच को एवं आंगनबाड़ी केन्द्र में भी उपलब्ध कराए गए हैं।

जारी मूल्यांकन पत्रक पर दावा आपत्ति आमंत्रित की गई है, जिसकी अंतिम तिथि 07 जुलाई 2024 निर्धारित की गई है। इच्छुक आवेदिकाएं कार्यालयीन दिवस पर प्रात: 10 बजे से 5:30 बजे तक परियोजना कार्यालय में दावा आपत्ति जमा कर सकते हैं।

पवन टाकिज रेलवे फाटक के समीप स्थित दुकानों के सामने पानी के ठहराव की समस्या को करें दूर-महापौर राजकिशोर प्रसाद

कोरबा । कोरबा नगर निगम महापौर राजकिशोर प्रसाद ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा है कि पावर हाउस रोड स्थित दुकानों के सामने होने वाले पानी के ठहराव की समस्या को तात्कालिक रूप से दूर करें, उन्होंने शहर की साफ-सफाई व्यवस्था का अवलोकन करते हुए कहा कि नियमित रूप से नालियों की सफाई की जाए तथा सफाई कार्यो पर कड़ी नजर रखी जाए, उन्होंने व्यवसायी बंधुओ से भी आग्रह किया कि वे दुकानों, प्रतिष्ठानों से निकले कचरे को नाली व रोड पर न डालें तथा सफाई व्यवस्था में अपना सहयोग दें।

अंचल की पावर हाउस रोड स्थित दुकानों के सामने रोड पर नाली नहीं होने के कारण बरसाती पानी के ठहराव की स्थिति निर्मित हो जाती है, स्थानीय व्यापारियों द्वारा उक्त समस्या से महापौर श्री प्रसाद को अवगत कराया था, महापौर श्री प्रसाद ने अधिकारियों के साथ स्थल का निरीक्षण किया तथा पानी के ठहराव की समस्या को तात्कालिक रूप से दूर करने के निर्देश देने के साथ ही कहा कि समस्या के स्थाई हल हेतु मस्जिद के समीप से नाली का निर्माण कराए तथा सर्वमंगला रोड पर निर्माणाधीन बड़े नाले से उक्त नाली को जोड़ें, उन्होंने मुरारका पेट्रोल पंप, रानी रोड, ओवर ब्रिज के नीचे के क्षेत्र का भ्रमण कर साफ-सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया तथा नियमित रूप से नालियों की सफाई करने एवं नालियों के ऊपर लगाए गए स्लैब को हटाकर एक बार नालियों की संपूर्ण सफाई किए जाने के निर्देश अधिकारियों को दिए। महापौर श्री प्रसाद ने व्यवसायी बंधुओ से आग्रह किया कि वे अपने दुकानों, प्रतिष्ठानों से निकलने वाले अपशिष्ट को नाली व सड़क पर न डालें, सफाई व्यवस्था में सहयोग दें।नगर निगम महापौर राजकिशोर प्रसाद ने दुकानदारों के निवेदन पर टी.पी. नगर स्थित नया बस स्टैंड का निरीक्षण किया, बस स्टैंड में स्थित दुकानों में पानी की सीपेज की समस्या का अवलोकन करते हुए बस स्टैण्ड की बिल्डिंग की मरम्मत के संबंध में आवश्यक कार्यवाही किए जाने के निर्देश अधिकारियों को दिए। उक्त सम्पूर्ण भवन मरम्मत योग्य है, जिसकी मरम्मत करने के संबंध में भी आवश्यक कार्यवाही के निर्देश महापौर श्री प्रसाद ने अधिकारियों को दिए।

जिला पुलिस ने नए कानूनों के लागू होने पर थानों में मनाया महोत्सव

कोरबा । संपूर्ण भारत में नया कानून भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम लागू हो गया है। जिसके प्रचार-प्रसार के लिए कोरबा जिला पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी के निर्देश अनुसार सभी थाना/चौकी/पुसके प्रभारियों के द्वारा इस दिवस को महोत्सव की तरह मनाया गया।

सभी थानो में जनप्रतिनिधि, पार्षद, सरपंच और आमजनता की उपस्थिति में पुलिस अधिकारियों के द्वारा नवीन कानून के प्रमुख प्रावधानों के बारे में बताया गया।इसी क्रम में थाना कटघोरा के कार्यक्रम में कटघोरा विधायक प्रेमचंद पटेल उपस्थित हुए। उसी प्रकार थाना करतला में विधायक रामपुर फूल सिंह राठिया ने कार्यक्रम को सुशोभित किया। थाना कोतवाली में महापौर राजकिशोर प्रसाद की गरिमामय उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कोरबा जिला पुलिस अधीक्षक स्वयं उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय हैं की 1 जुलाई से नये कानून लागू हो गये है। जिससे भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली एक नये युग में प्रवेश कर रही है जो देश की न्याय व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ और पारदर्शी बनाएंगी। भारतीय न्याय संहिता का उद्देश्य आपराधिक न्याय प्रणाली में सुधार करना है, जबकि भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने के साथ-साथ सुरक्षा उपायों को भी सुनिश्चित करती है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम न्यायालय में प्रस्तुत किए जाने वाले साक्ष्यों की मान्यता और प्रामाणिकता से संबंधित है। आज से जीरो और ई-एफआईआर भी रजिस्टर कराई जा सकेगी एवं सभी प्रक्रिया में निर्धारित समयसीमा लागू हो जाएगी।

छत्तीसगढ़ हेल्प वेलफेयर सोसाइटी ने डॉक्टरों को दिया धन्यवाद कार्ड

कोरबा ।कोरबा जिलान्तर्गत छत्तीसगढ़ हेल्प वेलफेयर सोसाइटी ने कोरबा मेडिकल कॉलेज में डॉक्टर डे का आयोजन किया, जिसमें समाज के प्रति डॉक्टरों के अभूतपूर्व योगदान को मान्यता दी गई। इस अवसर पर सोसाइटी ने विशेष धन्यवाद कार्ड देकर डॉक्टरों के प्रति आभार प्रकट किया।

संस्था के प्रदेश अध्यक्ष राणा ने कहा की डॉक्टर समाज की रीढ़ होते हैं, जो अपने समर्पण और कठिन परिश्रम से लाखों लोगों के जीवन में उजाला भरते हैं। हमें गर्व है कि हम ऐसे डॉक्टरों के साथ काम कर रहे हैं। डॉक्टर डे हमारे डॉक्टरों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का एक विशेष दिन है। छत्तीसगढ़ हेल्प वेलफेयर सोसाइटी इस अवसर पर डॉक्टरों को धन्यवाद देना चाहती है, जिन्होंने अपने निस्वार्थ सेवा से समाज को स्वस्थ रखने का संकल्प लिया है।

संस्था द्वारा धन्यवाद कार्ड दिए गए, जिन पर धन्यवाद, डॉक्टर साहब! लिखा हुआ था, जिसमें डॉक्टरों के योगदान के प्रति आभार व्यक्त किया गया था।

शराब की बोतल में मिले कीड़े

कोरबा । कोरबा जिले में मादक द्रव्य पदार्थ (देसी शराब) की बोतल में कीड़े मिले हैं। वही मादक द्रव्य पदार्थ (देसी शराब) में मिलावट करने का आरोप भी लगाया है। मादक द्रव्य पदार्थ की बोतलों में इससे पहले भी हरदीबाजार, उमरेली सहित अन्य क्षेत्रों में इस तरीके का मामला सामने आ चुका है। बार-बार सीलबंद मादक द्रव्य पदार्थ की बोतल में इस तरह कुछ न कुछ मिलने से मादक द्रव्य पदार्थ का सेवन करने वालो में भारी आक्रोश है। यह मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र रामपुर का है। कोरबा के सिविल लाइन थाना क्षेत्र रामपुर स्थित देशी शराब की दुकान से एक युवक ने मादक द्रव्य पदार्थ की एक बोतल खरीदी। दुकान परिसर से कुछ ही दूरी पर वे शराब पीने के लिए देखे तो उसमें कीड़ा तैरता हुआ दिखाई दिया। इसके बाद युवक ने इसकी शिकायत मैनेजर से की, देखते ही देखते शराब दुकान के आसपास के और भी युवकों की शराब दुकान में भीड़ जमा हो गई और लोगों ने जमकर इसका विरोध शुरू कर दिया। जिसके बाद वहां विवाद की स्थिति निर्मित हो गई।

टोल प्लाजा का स्थानीय ग्रामीण कर रहे विरोध

कोरबा। कोरबा जिले के कटघोरा-बिलासपुर मार्ग में कम दूरी पर बनाये गए दो टोल प्लाजा का विरोध स्थानीय ग्रामीणों ने शुरू कर दिया हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग के नियमो के मुताबिक दो टोल प्लाजा के बीच की दूरी 60 किलोमीटर से अधिक होनी चाहिए लेकिन राष्ट्रीय राजमार्ग-130 में कटघोरा-बिलासपुर के बीच 2 टोल प्लाजा बना दिया गया है। एक टोल प्लाजा पहले से ही ग्राम पतरापाली में संचालित है जबकि अब दूसरा टोल प्लाजा कटघोरा के निकट ग्राम रजकम्मा-मदनपुर में शुरू कर दिया गया है जिसको लेकर विरोध शुरू हो गया है।प्रदर्शनकारियो ने बताया कि दोनो टोल प्लाजा के बीच केवल 30 किलोमीटर की ही दूरी है। इधर कटघोरा के मोहनपुर के पास कई ग्राम के लोग सड़क पर उतरकर आंदोलन शुरू कर दिए हैं। छत्तीसगढ़ युवा शक्ति के बैनर तले ये पूरा प्रदर्शन किया जा रहा है। ये लोग टोल प्लाजा बंद करने मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे है।

न्यू कोरबा अस्पताल में मनाया गया विश्व चिकित्सक दिवस

कोरबा कोरबा अंचल के न्यू कोरबा अस्पताल में विश्व चिकित्सक दिवस मनाया गया। इस मौके पर एनकेएच ग्रुप डायरेक्टर डॉ. एस. चंदानी, एडीसी डायरेक्टर डॉ. वंदना चंदानी व सभी डॉक्टरों कोरबा व जमनीपाली ब्रांच ने केक काटकर सभी को विश्व चिकित्सक दिवस की बधाई दी। डॉक्टरों ने देश के महान डॉक्टर विधानचंद्र रॉय को भी याद करते हुए समाज की सेवा करने का संकल्प लिया गया। मरीजों की सेवा को सर्वोपरि मानकर इस दिन को मनाने का मकसद बेहतर स्वास्थ्य के प्रति लोगों को जागरूक करना और डॉक्टरों को उनकी समर्पित सेवा के लिए शुक्रिया करना है। यह दिन स्वास्थ्य सेवा देने वाले कर्मचारियों के अथक प्रयास और मेहनत को याद करने का होता है जो मरीजों का जीवन बचाने के लिए दिन-रात काम करते हैं।

न्यू कोरबा अस्पताल की डायरेक्टर डॉ. एस. चंदानी ने कहा कि यह दिन जितना डॉक्टरों के लिए महत्वपूर्ण है, उससे ज्यादा महत्व एवं चिकित्सा में सेवा का श्रेय नर्सिंग स्टाफ को जाता है जिनके अथक प्रयासों से ही कोई भी चिकित्सक किसी मरीज को स्वास्थ्य कर पाता है। डॉ. वंदना चंदानी ने कहा कि यह खास दिन समाज में डॉक्टरों के महत्वपूर्ण योगदान को याद करने के लिए है। विश्व चिकित्सक दिवस समाज में डॉक्टरों की भूमिका को चिह्नित करने के लिए मनाया जाता है। डॉक्टर यह सुनिश्चित करने के लिए अथक प्रयास करते हैं कि मरीज अच्छे से स्वास्थ्य रहें। अपने देश में डॉक्टर को इंसान के रूप में भगवान की तरह देखा जाता है। विश्व चिकित्सक दिवस देश ही नहीं पूरे विश्व के डॉक्टरों के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है।

उक्त कार्यक्रम के दौरान डॉ. एस.एल. पालीवाल, डॉ. आर. पालीवाल, डॉ. अविनाश तिवारी, डॉ. अरुण तिवारी, डॉ. ज्योति श्रीवास्तव, डॉ. डी.एच. मित्तल, डॉ. नागेंद्र बागरी, डॉ. अविनाश सिंग, डॉ. सुदीप्ता साहा, डॉ. रोहित मजूमदार, डॉ. सचिन टी. आर., डॉ. अमन श्रीवास्तव, डॉ. यशा मित्तल, डॉ. रिया दुबे, डॉ. आशीष, डॉ. बरखा, डॉ. ज्योति, डॉ. रतनदीप तिवारी, डॉ. प्रवीणसहित अस्पताल के कर्मचारी उपस्थित रहे।

अग्निशामक यंत्र रखने में अनेक विभाग है लापरवाह

व्यापारियों एवं आम लोगों को भी सुरक्षा के लिए रखनी चाहिए अग्निशामक यंत्र

सीताराम नायक

जांजगीर-चांपा। जिले में आगजनी की घटना आए दिन देखने एवं सुनने को मिलता है चाहे सरकारी कार्यालय हो या किसी व्यवसायिक स्थान किसी का घर एवं या हो दुकान अचानक आग लगने की खबर सामने आती है जिसमे लाखों का नुकसान उठाना पड़ता है ऐसे में जब कभी आगजनी की घटना घटे तो इसे प्रारंभिक तौर पर ही रोका जा सके।

इसके लिए लोगों को अग्निशामक यंत्र रखने की जरूरत है अगर प्रत्येक दुकानों में एवं शासकीय कार्यालय में तथा लोगों के घरों में अग्निशामक यंत्र उपलब्ध रहे तो बड़ा नुकसान होने से बचा जा सकता है। वही लोगों को धन हानि होने से बचाया जा सकता है। परन्तु जांजगीर चांपा एवं शक्ति जिले में अग्निशामक यंत्र लगाने को लेकर सरकारी कार्यालय के जिम्मेदार आगजनी की घटना रोकने के लिए कोई ठोस प्रबंध करते नजर नहीं आते । विशेष कर एक दो कार्यालय को छोड़कर बाकी सब शासकीय कार्यालय केवल सरकारी फायर ब्रिगेड के भरोसे ही चल रहे हैं जिसके पहुंचने से पहले लाखों करोड़ों का सम्मान जलकर राख हो जाता है। और घटना के समय अग्निशामक यंत्र उपलब्ध नहीं होने के कारण लोगों को भारी नुकसान का सहना पड़ता है। इसके लिए प्रत्येक नागरिकों को सचेत होने के साथ-साथ प्रत्येक कार्यालय के मुखिया को चाहिए कि अपने-अपने कार्यालय में अग्निशामक यंत्र रखें, विशेष कर शासकीय एवं निजी विद्यालयों में इसका होना आवश्यक है ताकि बड़ी घटना को रोका जा सके। जांजगीर चांपा में ही जिला कलेक्टर कार्यालय के अनेक विभागों में अग्निशामक यंत्र नहीं है वहीं अस्पतालों में भी इसे निहायत जरूरी समझ कर डॉक्टर एवं शासकीय कर्मचारियों तथा मरीजों की सुरक्षा के लिए रखना चाहिए।

जिस विभाग के अधिकारी जागरुक है उन विभागों में जरूर यह यंत्र लगाया गया है किंतु अनेक ऐसे कार्यालय हैं जहां यह अग्निशामक यंत्र नजर नहीं आता।अगर एकाएक हुई आगजनी की घटना के वक्त यह यंत्र उपलब्ध रहता है तो बड़े नुकसान होने से बचा जा सकता है और प्रारंभिक तौर पर ही आग को बुझाया जा सकता है। इसका उदाहरण तत्काल में बलौदा बाजार जिले में हुई हादसे को देखा जा सकता है वही कुछ वर्ष पहले जिला शिक्षा कार्यालय जांजगीर में वायर शार्ट सर्किट हो जाने के कारण आगजनी हो गया था जिसे समय पर नहीं रोका जा सका।

अगर उस समय कार्यालय में अग्निशामक यंत्र होता तो आगजनी को प्रारंभिक तौर पर ही रोका जा सकता था। कई बार दुकानों फैक्ट्रीयों में शार्ट सर्किट होने के कारण एवं अन्य कारणों से आग लग जाती है जिसे अग्निशामक यंत्र के अभाव में फायर ब्रिगेड को बुलाकर आग को बुझाया जाता है, फायर ब्रिगेड के समय पर नहीं पहुंचने से अपेक्षा से अधिक नुकसान हो जाता है ऐसे में बड़े वारदात को रोकने के लिए अग्निशामक यंत्र का दुकानो,सरकारी कार्यालय एवं लोगों के घरों में होना आवश्यक है इसके लिए विशेष ध्यान देने की जरूरत है ताकि कोई धन हानि ना हो सके। जिले के मुखिया को आगजनी की घटना को रोकने के लिए अग्निशामक यंत्र खरीदने के लिए निर्देश देने की जरूरत है।

पटवारी को किया सस्पेंड, संघ उतरा आंदोलन में

जांजगीर चांपा। सारंगढ मे पटवारी उमेश कुमार के खिलाफ कलेक्टर द्वारा की गई निलंबन की कार्रवाई से अब संभाग भर के पटवारी असंतुष्ट नजर आ रहे है, कलेक्टर द्वारा पटवारियों को पक्ष रखने के लिए मिलने का समय नहीं देने से पटवारी संघ आक्रोषित हो गए है

पटवारी की निलंबन को वापस लेने की मांग को लेकर बिलासपुर संभाग के पटवारियों ने आज से अनिश्चित कालीन हड़ताल शुरू कर दिया है,जांजगीर के पटवारियों ने अपना काम रोक कर कर्मचारी भवन मे धरना मे बैठे है और उन्होंने भू अभिलेख को कम्प्यूटर से हटाने या बदलने के लिए ह्यस्त्रद्व कार्यालय या एनआईसी से संभव होना बताया, जिला पटवारी संघ के अध्यक्ष ने इस मामले मे पटवारी के बजाय एन आई सी या एसडीएम कार्यालय की जाँच करने की मांग की,और मांग पूरा नहीं होने पर आंदोलन करने की चेतावनी दी।

75 हजार के नकली नोट के साथ एक गिरफ्तार

जशपुर । जाली नोट का कारोबार करने वाले के विरुद्ध जशपुर पुलिस ने बड़ी कार्यवाही करते एक व्यक्ति को 75 हजार रूपये के नकली नोट के साथ गिरफ्तार किया है। मामले में थाना बागबहार में आरोपी के विरूद्ध धारा 489(बी), 489 (सी), 120(बी) का अपराध पंजीबद्ध किया गया है।

मड़वा विद्युत संयंत्र में 54 श्रमिकों की टीबी जांच एवं स्वास्थ्य परीक्षण किया गया

जांजगीर । अटल बिहारी वाजपेयी ताप विद्युत संयंत्र (एबीवीटीपीएस) मड़वा के व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र में निःशुल्क क्षय रोग (टी.बी.) जाँच एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ बलौदा के खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ. यूके. तिवारी एवं अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ.एम.आर.स्नेही के विशिष्ट आतिथ्य में कार्यक्रम के अध्यक्ष अतिरिक्त मुख्य अभियंता भरत गड़पाले द्वारा किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री गड़पाले ने औद्योगिक श्रमिकों से क्षय रोग परीक्षण कराने का अनुरोध किया। श्री गड़पाले ने बताया कि वह व्यक्ति जो 15 दिन से अधिक खांसी अपने कार्यक्षेत्र में कोल या राखड़ धूलकणों के संपर्क होने से एलर्जी या मौसम परिवर्तन या धूम्रपान को मान रहे हैं, वह जाने अनजाने में सक्रिय तपेदिक रोगी के संपर्क में आ जाएं तो उन्हें टी.बी. रोग के लक्षण हो सकते हैं। उन्होंने सलाह दी है कि श्रमिकों को सुरक्षा की दृष्टि से मानक हेपा फिल्टर वाले श्वसन मॉस्क का प्रतिदिन कोल या राखड़ धूल से संबंधित कार्यक्षेत्र में निरन्तर उपयोग करना चाहिए।

यह शिविर कार्यपालक निदेशक एसके बंजारा एवं जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी स्वाति वंदना सिसोदिया के निर्देश एवं मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इस शिविर में कुल 54 श्रमिकों ने स्वेच्छापूर्वक स्वास्थ्य जाँच एवं क्षय रोग परीक्षण कराया। नौ श्रमिकों से बलगम के नमूने टी.बी. के जीवाणु परीक्षण हेतु संग्रहित किए गए। कार्यक्रम में बलौदा खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ. यूके. तिवारी ने उपस्थित जन समुदाय को स्वस्थ जांजगीर अभियान के अंतर्गत सघन टी.बी., कुष्ठ रोग, मोतियाबिन्द, सिकलसेल, दिव्यांगता और आयुष्मान कार्ड खोज अभियान की जानकारी दी।

अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ.एम.आर.स्नेही ने अपने संबोधन में बताया कि एड्स, कुपोषण, सिलिकोसिस जैसे बीमारियों और गांजा, बीड़ी के धूम्रपान से रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है, ऐसी स्थितियों में टीबी शीघ्र और अधिक उग्र रूप से व्यक्ति को रोगग्रस्त करता है जिससे अकाल मृत्यु की आशंका बढ़ जाती है। शिविर में सीएचसी. बलौदा के चिकित्सा अधिकारी डॉ. बलराम रोहिदास के नेतृत्व में एमएलटी. आशीष व लक्ष्मीकांत और सीएचओ. शोभा व ज्योतिकमल द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण, बलगम की जाँच, नूमने का संग्रहण एवं उचित परामर्श दिया गया। इस अवसर पर क्षयरोग आधारित प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गई।

इसमें अग्निशमन विभाग के श्रमिकों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम में वरिष्ठ चिकित्साधिकारी डॉ.आरके. साहू, मुख्य अग्निशमन अधिकारी एमके रायकवार, वरिष्ठ उपचार पर्यवेक्षक राजेश ओग्रे, सोमदत्त, अंजु, बिनोद, भारती, कृष्ण कुमार ईश्वर, भुवनेश्वरी, राधिका, अशोक पटेल का सराहनीय योगदान रहा।

ऑनलाईन ठगी करने वाले बांगलादेशी व कैमरून मूल के 2 अंतराष्ट्रीय ठगो सहित चार गिरफ्तार

बिलासपुर। बिलासपुर पुलिस ने ऑनलाईन सायबर ठगी करने वाले एक बांगलादेशी व एक कैमरून मूल के अंतराष्ट्रीय ठगो सहित कुल 4 शातिर जालसाजो को हिमाचल प्रदेश से गिरफ्तार किया है।

मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी सियाशरण तिवारी निवासी मोपका बिलासपुर को अज्ञात मोबाईल धारक द्वारा वॉट्स्अप के माधयम से संपर्क कर घर में रहकर कार्य करने व लाभ अर्जित करने प्रलोभन दिया गया एवं ऑनलाईन टेलीग्राम एप के माध्यम से लिंक भेजकर गूगल मैप पर होटल, लॉज, किला की ऑनलाईन रिव्यू रेटिंग कर उसका स्क्रीन शॉट भेजने पर आय अर्जित कराने के नाम पर प्रार्थी से कुल 27,80,510 रूपये ठगी करने की रिपोर्ट पर अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। प्रार्थी के साथ धोखाधडी करने वाले व्यक्तियो की जानकारी एकत्र करने सायबर पोर्टल पर रिपोर्ट दर्ज कर कर अवलोकन किया गया संदिग्ध बैंक खातो को चिन्हांकित कर बैंक स्टेटमेंट, एटीएम फुटेज की समीक्षा एवं तकनीकी इन्पुट के आधार पर आरोपियो के हिंमाचल प्रदेश के शिमला व सोलन के आसपास मे ठिकाना बनाकर अपराध करने की जानकारी प्राप्त हुई। डॉ. संजीव शुक्ला (भा.पु.से.) पुलिस महानिरीक्षक बिलासपुर रेन्ज बिलासपुर एवं रजनेश सिंह (भा.पु.से.) पुलिस अधीक्षक बिलासपुर द्वारा धोखाधडी व सायबर अपराधो की समीक्षा कर समस्त राजपत्रित अधिकारियो को विशेष निर्देश दिये गये थे इस निर्देश के पालन में एक विशेष टीम निरीक्षक राजेश मिश्रा के निर्देशन मे हिंमाचल प्रदेश के शिमला व सोलन ओर रवाना की गई थी टीम द्वारा 01 सप्ताह से अधिक समय तक हिंमाचल प्रदेश के शिमला व सोलन में रहकर आरोपीयो का पता ठिकाना ज्ञात कर विवेचना प्रारम्भ की गई जो आरोपीगण ऑनलाईन ठगी का काम करने में संलिप्त होने की जानकारी प्राप्त हुई। स्थानीय पुलिस के सहयोग से आरोपी प्रियांशु रंजन निवासी हैदराबाद को हिरासत में लेकर पुछताछ किया गया जो अपने साथी मो. शोबुल, राजवीर सिंह व टेम्फु कार्ल नगेह के साथ मिलकर विगत 01 वर्ष से अधिक समय से टेलीग्राम एप के माध्यम से लोगो को जोड़कर विभिन्न प्रकार से मुनाफा कमाने के नाम पर ऑनलाईन ठगी का काम करना स्वीकार किये है ठगी के काम में उपयोग में आने वाले मोबाईल फोन, लैपटॉप, फर्जी सिम कार्ड व फर्जी बैंक खाते जप्त किये गये है, गिरफ्तार किये गये चारो आरोपी बाहरा यूनिवर्सिटी वाक्नाघाट सोलन के छात्र है, गिरफ्तार आरोपीयो को न्यायिक रिमाण्ड पर माननीय न्यायालय पेश किया जायेगा। मामले में पुलिस ने प्रियांशु रंजन पिता विजय कुमार पाण्डेय उम्र 20 वर्ष निवासी एसबीआई भास्कर रॉव नगर साई जीएनआज रेसीडेंनसी प्लॉट न. 08, 09 सैनिकपुरी हैदराबाद हाल निवासी बाहरादुनौती वाक्माघाट शिमला (हिमाचल प्रदेश),राजवीर सिंह पिता भारत सिंह उम्र 22 वर्ष निवासी ग्राम व पोस्ट कलालकरन जिला (जम्मू काश्मीर) हाल निवासी बाहरा यूनिवर्सिटी वाक्नाघाट शिमला (हिमाचल प्रदेश),मो0 शोबुज मोरल पिता मो. शहाबुद्दीन मोरल उम्र 25 वर्ष निवासी तेलीखानी दारून मोरनी खुलना बांग्लादेश हाल निवासी बाहरा यूनीवर्सिटी कलाघाट शिगला (हिमाचल प्रदेश)तथा टेम्कु कार्ल नगेह पिता टेग्फ रिचर्डस उम्र 22 वर्ष निवासी बामेन्डा 3 नर्कन कमेरुनियन हाल निवासी बाहरा यूनिवर्सिटी वाक्नाघाट सोलन (हिमाचल प्रदेश)को गिरफ्तार किया है।

90 लाख का हायर सेकेंडरी स्कूल भवन हैंडओवर से पहले जर्जर

जांजगीर- चांपा। बलौदा ब्लाक अंतर्गत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मड़वा का भवन बिना हैंडओवर के जर्जर हो गया है। निर्माण के दौरान ही इसमें गंभीर अनियमितता बरती गई थी और दीवारों पर जगह-जगह दरारें आ गई थी। वर्तमान में इसके खिड़की दरवाजे भी चोरों ने पार कर दिया है। भवन के अभाव में अभी भी यहां मीडिल और हायर सेकेंडरी स्कूल का संचालन अलग-अलग पालियों में होता है।शासकीय राशि का दुरूपयोग किस तरह अधिकारी और ठेकेदारों की मनमानी से होता है। इसका उदाहरण मड़वा के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के भवन को देखकर समझा जा सकता है। 8 साल पूर्व लगभग 90 लाख रूपए की लागत से निर्मित स्कूल भवन हैंडओवर होने से पहले ही खस्ताहाल हो गया है।

निर्माण के समय ही लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों ने इस पर ध्यान नहीं दिया और स्कूल भवन का फर्श जमीन से ऊंचा नहीं बनाया गया। जिसके चलते बरसात के दिनों में स्कूल में पानी घुस जाता है। इसके अलावा छत से भी पानी टपकता है। दीवारों पर जगह-जगह दरारें आ गई है। स्कूल के तत्कालीन प्राचार्य ने स्तरहीन निर्माण के चलते स्कूल भवन कोटैकओवर नहीं किया था। इसके बाद भवन में लगे खिड़की , दरवाजे चोरों ने पार कर दिया और अब स्कूल भवन खंडहर में तब्दिल हो गया है। 90 लाख का भवन कोई काम का नहीं है। भवन के अभाव में विद्यार्थियों को लाइब्रेरी, प्रयोगशाला और अन्य स्थानों में किसी तरह बैठाकर पढ़ाई कराई जा रही है मगर विभागीय अधिकारी न तो स्कूल की सुध ले रहे हैंन ठेकेदार को इसकी परवाह है।

हायर सेकेंडरी स्कूल भवन पूरी तरह जर्जर हो गया है। खिड़की, दरवाजों की चोरी हो गई है। अब तक इस भवन का हैंडओवर नहीं हो सका है। किसी तरह पुराने भवन में विद्यार्थियों को बैठाकर अध्यापन की व्यवस्था बनाई जाती है। स्कूल जतन योजना के तहत निर्मित भवन में बिजली नहीं लगने से उसका उपयोग नहीं हो पा रहा है।

योगेंद्र शुक्ला

प्रभारी प्राचार्य, शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला मड़वा

स्कूल भवन का निर्माण उनके समय का नहीं है। इसकी जानकारी कार्यालय में ली जाएगी। हैंडओवर में क्या समस्या हैऔर पीडब्ल्यूडी के नियंत्रण यह भवन बना है या दूसरे विभाग के नियंत्रण में यह देखना पड़ेगा।

डीजी साय

एसडीओ, पीडब्ल्यूडी जांजगीर

ग्रामीण इलाकों में फल-फूल रहा नशे का कारोबार

जांजगीर चांपा। इन दिनों चांपा नगर सहित ग्रामीण इलाकों में जगह-जगह शराब की अवैध बिक्री जोरों से चल रहा है। इस ओर आबकारी विभाग और ना ही चांपा पुलिस विभाग ध्यान दे रही है। जिसके कारण शराब बेचने वाले अवैध कारोबार से जुड़े लोग धड़ल्ले से बिना किसी कानून की डर से शराब की अवैध बिक्री कर रहे हैं। ऐसा लगता है प्रशासन ने भी शराब माफियाओं, कोचियों को मौन स्वीकृति प्रदान की गई हो। जिसके कारण बिना डर भय के सुबह से देर रात्रि तक शराब बेचते देखा जा सकता है। आबकारी व पुलिस विभाग की तरफ से किसी भी प्रकार की कोई भी कार्रवाई नजर नहीं आ रही है।

यहां हो रही अवैध शराब की बिक्री-अवैध शराब का कारोबार चांपा थाना क्षेत्र के ग्राम सिवनी के हाई स्कूल चौक के पास ठेला पर, बजरंग चोक सहित कई ऐसे कई ठिकाने है जहां आपको आसानी से शराब मिल जाएगी। कई जगहों पर तो गांव में नशीली सिरप टैबलेट की भी बिक्री धड़ल्ले से जारी है लेकिन कार्रवाई शून्य है। कई बार पुलिस प्रशासन को इस मामले में जानकारी दी हुई गई है लेकिन कार्रवाई अब तक नहीं हुई है। जिसका फायदा उठाकर गांव के कई बदमाश अपने गोरख धंधे को बेखौफ चला रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक इन गतिविधियों की जानकारी पुलिस को भी है लेकिन ना जाने क्यों पुलिस मेहरबान बनी हुई है। चांपा थाना क्षेत्र में जगह लंबे समय से यह खेल चल रहा है।

शिवा साहू के एक्सिस बैंक लाकर से मिला डेढ़ करोड

रायगढ़ । छत्तीसगढ़ में भोले भाले लोगो को शेयर मार्केट तथा क्रीप्टो करेंसी के जरिए 30 प्रतिशत लाभ देने के झांसा में लेने वाला आरोपित शिवा साहू राजधानी रायपुर से गिरफ्तार हुआ है।पुलिस के दो दिवसीय रिमांड में पुछताछ मे उसके एक्सिस बैंक के लाकर से डेढ़ करोड़ नगदी, पौने दो किलो सोना एवं डेढ़ किलो चांदी जब्त की है।

अग्निवीर सेना भर्ती रैली के लिए निःशुल्क शारीरिक दक्षता प्रशिक्षण हेतु पंजीयन प्रारंभ

30 जुलाई तक करा सकते है पंजीयन

जांजगीर-चांपा । भारतीय सेना में युवाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ राज्य के सभी जिलो के लिए अग्निवीर सेना भर्ती रैली का आयोजन 04 दिसम्बर 2024 से 12 दिसम्बर 2024 तक आयोजित होने की संभावना है। इस जिले के युवाओं को अग्निवीर भर्ती में अंधिक से अधिक संख्या में लाभ प्राप्त हो इस उद्देश्य से निशुल्क शारीरिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना है। अतः अग्निवीर भर्ती हेतु ली गई ऑनलाईन परीक्षा में उत्तीर्ण युवा जो निशुल्क शारीरिक प्रशिक्षण में शामिल होना चाहते है वे अपना पंजीयन 30 जुलाई 2024 तक जिला रोजगार कार्यालय जांजगीर चांपा में उपस्थित होकर करा सकते है।

30 जून को सेवानिवृत्त 17 कर्मचारियों का पेंशन भुगतान आदेश जारी

जांजगीर-चांपा । कलेक्टर आकाश छिकारा के कुशल मार्गदर्शन में जिले में कार्यरत अधिकारी, कर्मचारियों के शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त उपरांत उनके पेंशन भुगतान आदेश एवं मृत्यु सह सेवानिवृत्ति उपदान भुगतान आदेश प्रदाय किये जाने की पहल की गई। आज कलेक्टर श्री आकाश छिकारा ने 30 जून 2024 को सेवानिवृत्त होने वाले 17 कर्मचारियों को आज पीपीओ और जीपीओ की कॉपी द्वारा प्रदान किया गया।

जिला कोषालय अधिकारी ने बताया कि दिनेश कुमार शर्मा, हैदर अली रिजवी, मन्नू लाल कर्ष, प्रमोद कुमार सिंह बैस, श्रीमती शारदा देवांगन, सुधेश कुमार दुबे, श्रीमती उत्तरा राठौर, किशोर कुमार राठौर, जगदीश प्रसाद कुम्भकार, अशोक कुमार चौहान, कमलाकांत मिश्र, श्भूपाल सिंह रात्रे रामकुमार शर्मा, होरी लाल कहरा, श्रीमती चंद्ररेखा पाण्डेय, लक्ष्मी प्रसाद धीवर एवं बुधराम भारते को कलेक्टर ने पीपल एवं बेल के पौधे से सम्मानित करते हुये पेंशन भुगतान आदेश, मृत्यु सह उपदान भुगतान आदेश एवं पेंशन परिचय पत्र प्रदाय किया। इस अवसर पर वरिष्ठ कोषालय अधिकारी डॉ. रूपेश कुमार पाठक, सहायक कोषालय अधिकारी ज्ञानेश्वर कुमार बरेठ सहित संबंधित अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

अवैध शराब निर्माण एवं विक्रय के विरुद्ध आबकारी विभाग की कार्रवाई

महासमुंद। कलेक्टर के निर्देशन में आबकारी विभाग महासमुंद द्वारा अवैध शराब के विरुद्ध निरंतर कार्रवाई जारी है। शनिवार को मुखबीर सूचना के आधार पर आबकारी टीम बागबाहरा द्वारा भुसडी घाट, साल्हेभाठा पहुँच कर छापामार कार्रवाई करते हुए होमेश डडसेना निवासी ग्राम परकोट थाना जोंक के आधिपत्य से एक प्लास्टिक बोरी में जेब्रा छाप के 51 पाउच और हिरन छाप के 71 पाउच कुल 122 पाउच कुल 24.40 लीटर उड़ीसा राज्य निर्मित महुआ शराब, कीमत 4880 रुपए बरामद कर जप्त किया गया ।

नए कानूनों के क्रियान्वयन के लिए जिले के सभी थाना,चौकी को दिया गया निर्देश

जांजगीर-चाम्पा। इसी क्रम में विवेक शुक्ला पुलिस अधीक्षक जांजगीर-चाम्पा द्वारा थाना चाम्पा में नवीन कानूनो को क्रियान्वयन उत्सव का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगो को नवीन कानून के संबंध में विस्तृत जानकारी देकर बताया कि नवीन भारतीय न्याय संहिता का उद्देश्य आम जनता को त्वरित रूप से न्याय दिलाकर राहत प्रदान करना है, इसलिए नवीन कानून के बारे में सभी पुलिस अधिकारियों एवम सभी जनता को जानकारी होना बहुत आवश्यक है। अपराधियों के लिए नए कानून में गंभीर सजा का प्रावधान किया गया है।मॉब लिचिंग, भारतीय न्याय संहिता की धारा 103 (2) में एक नया प्रावधान है, जिसमें यह उल्लेख किया गया है कि जब पांच या इससे अधिक ब्यक्तियों का समूह मिलकर नस्ल, जाति या समुदाय, लिंग, जन्म स्थान, भाषा, व्यक्गित, विश्वास या किसी अन्य आधार पर हत्या करता है तो समूह के प्रत्येक सदस्य को मृत्यूदंड या आजीवन कारावास का दण्ड होगा और जुर्माना भी देना होगा जिसके संबंध में विस्तृत जानकारी दिया गया तथा नये कानून में दण्ड से न्याय की ओर ले जाने के लिए तथा महिला एवं बच्चो से संबंधित कानून को संवेदनशील बनाया गया है तथा महिला एवं बच्चो से संबंधित अपराध में कठोर दण्ड का प्रावधान किया गया है। नये कानून में संगठित अपराध को परिभाषित करते हुए कठोर दण्ड का प्रावधान किया गया है। पुलिस अधीक्षक जांजगीर द्वारा आस्वस्त किया गया कि नये कानून में पुलिस आम जनता की मदद करेगी तथा उनमें जागरूकता लायेगी।

अति. पुलिस अधीक्षक राजेन्द्र कुमार जाससवाल द्वारा थाना जांजगीर में नवीन कानूनो को क्रियान्वयन उत्सव का शुभारंभ किया गया तथा कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगो संज्ञेय अपराध एवं असंज्ञेय अपराध की विस्तृत जानकारी तथा जमानती धारा में आरोपी को जमानत का अधिकार है जिसके संबंध में लोगो को बारिकी से जानकारी दिया गया। तथा इसी प्रकार अजमानीय मामला में थाना से आरोपी को पुलिस द्वारा जमानत नही दिया जा सकता है, न्यायालय में आरोपी को विधिवत् पेश किया जाता है तथा न्यायालय द्वारा ही आरोपी को जमानत दिया जाता है। तथा नवीन कानून के अंतर्गत आवेदक, शिकायतकर्ता को उसके द्वारा की गई रिपोर्ट की प्रगति की जानकारी समय-समय पर पुलिस द्वारा उपलब्ध कराया जावेगा।

एसडीओपी चाम्पा युदमणि सिदार द्वारा थाना चाम्पा में नवीन कानूनो को क्रियान्वयन उत्सव कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगो को बताया कि भारतीय दण्ड संहिता 1860 के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973 के स्थान पर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 के स्थान पर भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 को अधिसूचित किया गया है। इन नए कानूनों का उद्देश्य औपनिवेशिक कानूनों में बदलाव, नागरिक केन्द्रित, अभियुक्त केन्द्रित, पीड़ित केन्द्रित कानून एवं कल्याणकारी अवधारणा, अभियोजन को मजबूती प्रदान करना, न्याय को नागरिक अनुकूल बनाना, उचित नियंत्रण और संतुलन के साथ पुलिस का सामंजस्यपूर्ण बनाना, प्रक्रियाओं की सरलता एवं संक्षिप्त ट्रायल को सरल बनाना, अनुसंधान में वैज्ञानिक तकनीक (फोरेंसिक), डिजीटल एवं इलेक्ट्रानिक साक्ष्य के प्रावधान के साथ समयबद्ध प्रक्रिया का पालन किया जाना है।

नवीन कानून के क्रियान्वयन उत्सव में थाना जांजगीर में उप पुलिस अधीक्षक मुख्यालय श्री विजय प्रसाद पैकरा, रक्षित निरीक्षक प्रदीप कुमार जोशी, निरीक्षक प्रवीण कुमार द्विवेदी, मीडियागण और गणमान्य लोग उपस्थित हुए एवं सभी ने कार्यशाला में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

अंतर्राष्ट्रीय अग्रवाल युवा सम्मेलन के प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष बने अमर

जल्द होगा कार्यकारिणी का विस्तार सभी राज्यों में सौपी जायेगी जिम्मेदारी - अमर

जांजगीर-चांपा। जिले के युवा समाज सेवी अमर सुल्तानिया को अंतर्राष्ट्रीय अग्रवाल युवा सम्मेलन के प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष पद की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। अमर सुल्तानिया को इस प्रतिष्ठित पद के मिलने की खबर से युवा वर्ग में खासा उत्साह नजर आ रहा है, साथ ही वरिष्ठजनों ने भी इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं और आशीर्वाद प्रेषित किया है।

इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी के लिए अमर सुल्तानिया ने विश्व अग्रवाल समाज के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार मित्तल एवं सचिव कन्हैया गोयल को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए समाज के उम्मीदों पर खरा उतरने और वरिष्ठजनो के मार्गदर्शन में समाज के उतरोतर प्रगति की कामना करते हुए निर्धारित राष्ट्रीय कार्यक्रमों का क्रियान्वयन बेहतर ढ़ंग से करने की बात कही है।

बता दें कि विश्व में अग्रवाल समाज के सर्वव्यापी सबसे बड़े संगठन अंतर्राष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन का 28 जून 2024 को विस्तार किया गया जिसके तहत अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार मित्तल (कोलकाता) ने जांजगीर चांपा जिले के युवा समाज सेवी अमर सुल्तानिया को महत्वपूर्ण जिम्मेंदारी सौपते हुए अंतर्राष्ट्रीय अग्रवाल युवा सम्मेलन का राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया हैं।

अंतर्राष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन में पहली बार युवा टीम का हुआ गठन

गौरतलब है कि अंतर्राष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय युवा टीम का गठन किया है जिसके तहत प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष अमर सुल्तानिया को बनाया गया है। तेज तर्रार और कुशल नेतृत्व के लिए पहचाने जाने वाले अमर सुल्तानिया को इस बड़ी जिम्मेदारी मिलने से संगठन को मजबूती मिलेगी साथ ही पूरे देश युवा में युवा संगठन की मुख्य धारा से जुड़कर समाज की बेहतरी के लिए कार्य करेंगे।

देश के प्रत्येक राज्य में कार्यकारिणी का होगा शीघ्र विस्तार

अमर सुल्तानिया ने अंतर्राष्ट्रीय अग्रवाल युवा सम्मेलन के प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाये जाने के बाद पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि जिस विश्वास के साथ उन्हे यह बड़ी और महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है उस पर वे निष्ठा के साथ कार्य करेंगे। उन्होने कहा कि जल्द ही युवाओं को सम्मेलन से जोड़ने का काम प्रारंभ करेंगे। संगठन की सदस्यता अभियान के साथ ही पूरे देश में समाज के हित में सक्रिय युवाओं की मजबूत टीम गठन करेंगे।

सुल्तानिया परिवार समाज सेवा के लिए है प्रतिष्ठित

अमर सुल्तानिया ऐसे परिवार से हैं जहां समाज सेवा की बुनियाद बचपन से ही उनके आचरण में समाहित की जाती है। उनका परिवार हरिलीला ट्रस्ट के माध्यम से हर साल स्वास्थ्य शिक्षा एवं जरूरत मंदो की सेवा के लिए बड़े आयोजन करता आ रहा हैं। सुल्तानिया परिवार की बेहतर छवि के साथ ही धार्मिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका वजह से समाज का हर वर्ग उनसे सीधे जुड़ाव रखता है। अमर सुल्तानिया छ.ग. प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच के प्रदेश अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय पदाधिकारी के पद पर भी बेहतर काम और सेवा के लिए प्रसिद्धी पा चुके है इसके अलावा छ.ग. प्रांतीय युवा अग्रवाल मंच के प्रदेश उपाध्यक्ष, जिला भाजपा के उपाध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय वैश्य सम्मेलन के प्रदेश महामंत्री, प्रदेश राईस मिल एसोसिएशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री श्याम ग्रुप के डायरेक्टर के साथ ही कई संगठनो में सक्रिय रूप से सामाजिक सरोकार से जुड़े हुए है।

गांव के पास हाथी के विचरण से रतजगा करने मजबूर हैं ग्रामीण

रायगढ़। बंगुरसिया सर्किल में 15 हाथियों का दल विचरण कर रहा है। हाथियों ने यहां किसानों की फसल का रौंदने के साथ घरों को तोड़ा है। इसकी सूचना मिलने पर वन विभाग की टीम ने मौके प जाकर नुकसान का आंकलन शुरू कर दिया है। वन अमला हाथियों को खदेड़ने का काम भी कर रहा है। दूसरी ओर गांव के आसपास बड़ी संख्या में हाथियों के विचरण की सूचना पर ग्रामीण रतजगा कर रहे हैं।

रायगढ़ वन मंडल के अंतर्गत जुनवानी सर्किल में बंगुरसिया आता है। यह शहर से करीब 10 किलोमीटर दूर गांव हैं। जंगल के बीच बसाहट होने से यहां वन्य जीवों का वर्षो से आवास रहवास है। बीते दिन बंगुरसिया के जंगल से निकल कर पांच हाथियों का दल गांव के करीब खेत व घर आबादी इलाके तक आ गया।इसके बाद हाथियों ने खेतों में उतर कर वहां लगे फसल को अपने पैरों तले रौंदते हुए उन्हें खाकर अपना पेट भरे । ततपश्चात गांव की ओर जाकर घुराउ लकड़ा के मकान को क्षतिग्रस्त कर दिए। इसकी भनक लगते ही ग्रामीणों ने हाथों में मसाला और शोर मचाते हुए हाथियों को भगाने का प्रयास किए। पूरी रात रतजगा करने के बाद हाथी से गांव व जनहानि को रोकने में वे सफल हुए है। तड़के सुबह जब ग्रामीण जन खेत खलिहान में लगे फसलों का जायजा लेने गए तो वहां का नजारा को देखकर उनके होश उड़ गए। ततपश्चात बीट गार्ड के माध्यम से वन अमला को सूचना दी गई।बजितने काफी मशक्कत के बादहाथियों का झुंड वापस जंगल की ओर चले गया। तब ग्रामीणों ने राहत की सांस ली।

वनकर्मी व ग्राामीण मौके पर पहुंचे और वन अमला के द्वारा नुकसान का आंकलन किया गया। ताकि मुआवजा प्रकरण तैयार किया जा सके। हाथियों के चहलकदमी से अंचल वासियों को भयभीत माहौल में जिने को मजबूर कर रहे है।

विभागीय अधिकारियों ने बताया कि दिन के समय हाथियों का दल जंगल में रहता है और रात होने के बाद जंगल से निकल कर खेतों में आ रहे हैं। इसके बाद यहां अपने पैरों तले फसलों को रौंद रहे हैं। बताया जा रहा है कि हाथियों का झुंड कक्ष क्रमांक 909, 914 में विचरण कर रहे हैं और हाथियों की मौजूदगी को देखते हुए बंगुरसियां, चक्रधरपुर, नवागांव, धूमाबहाल, जुनवानी, छिरवानी के ग्रामीण चिंता में हैं। हांलाकि वन विभाग द्वारा लगातार उन पर नजर रख रहे हैं ताकि किसी प्रकार की कोई जनहानि न हो सके।

बंगुरसिया सर्किल में लगातार हो रहे नुकसान को देखते हुए ग्रामीणो द्वारा बीते वन मण्डल अधिकारी को ज्ञापन देकर क्षतिग्रस्त फसल के नुकसान को लेकर मुआवजा की मांग किए। इसके अलावा ओड़िसा सरकार द्वारा जिस तरह फसलों को नुकसान से बचाने करेंट फेसिंग की उसकी मांग किये है।

अनमोल वचन......

**सीढ़ियों की जरुरत उन्हें है जिन्हें छत तक जाना है,
मेरी मंजिल तो आसमान है, रास्ता भी खुद ही बनाना है!**

विपक्ष के नेता के रूप में राहुल मोदी के लिए नई चुनौती

यह कहना गलत नहीं होगा कि राहुल गांधी अब आगे बढ़ चुके हैं। लोकसभा में विपक्ष के नेता के रूप में कार्यभार संभालने का उनका फैसला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए बुरी खबर है, जिन्होंने पिछले एक दशक में हमेशा विपक्ष को किसी न किसी तरह से निशाना बनाया है। संसद में विपक्ष के हमले में राहुल गांधी का सबसे आगे होना इस बात का संकेत है कि मोदी सरकार के लिए हमेशा की तरह काम करना अब ठीक नहीं रहेगा, क्योंकि लोकसभा में भारतीय जनता पार्टी के पास 237 सीटें हैं, जो भाजपा से सिर्फ तीन सीटें कम हैं। इस फैसले का मतलब था कि 54 वर्षीय नेता उस समय आगे बढ़कर बल्लेबाजी करेंगे, जब विपक्ष को विराट कोहली, सचिन तेंदुलकर, एम.एस. धोनी, सुनील गावस्कर, कपिल देव और के. श्रीकांत की जरूरत होगी। विपक्ष को लगातार बॉडीलाइन गेंदबाजी का सामना करना पड़ रहा है। यह पूरी तरह से खतरनाक और मतलबी है। यह क्रिकेट नहीं है। ओम बिरला को दूसरी बार स्पीकर बनाए जाने के बाद, विपक्ष के प्रभावी कामकाज के लिए बाधाएं कम नहीं हुई हैं। लेकिन यह श्री गांधी और पूरे विपक्ष के लिए सुधार, अनुकूलन और जीत हासिल करने की परीक्षा भी है। एक बात स्पष्ट है। प्रधानमंत्री मोदी ऐसे समय में पीठासीन अधिकारी के रूप में सबसे भरोसेमंद व्यक्ति को चाहते थे, जब दलबदल विरोधी अधिनियम उन्हें जबरदस्त शक्तियां देता है। विपक्ष के लिए, श्री गांधी सबसे अच्छे दांव हैं, जिन्होंने यह सब देखा है और इससे गुजरे हैं। सबसे खराब और सबसे अच्छा। उच्च ज्वार और निम्न ज्वार। वह स्वतंत्र भारत में सबसे अधिक गाली-गलौज, ट्रोल, उपहास और अपमानित नेता रहे होंगे। श्री गांधी ऐसे समय में सही साबित हुए हैं जब विपक्ष के सामने चुनौतियां थोड़ी भी कम नहीं हुई हैं, बावजूद इसके कि भारत समूह ने 237 सीटें हासिल की हैं, जो भाजपा से सिर्फ तीन कम हैं। श्री मोदी बहुत तेज, चतुर और चालाक हैं। प्रशांत किशोर, जो राहुल या कांग्रेस के बिल्कुल प्रशंसक नहीं हैं, ने हाल ही में चुनावी मोर्चे पर लगातार पराजय के बावजूद पिछले एक दशक में आगे बढ़ने के लिए श्री गांधी के धैर्य और दृढ़ संकल्प की प्रशंसा की थी। किशोर ने एक दुर्लभ प्रशंसा में सुझाव दिया कि अगर राहुल की जगह मोदी होते तो वे बहुत पहले ही हार मान चुके होते। नई लोकसभा में एक अच्छी बात यह है कि समाजवादी पार्टी के सुप्रीमो अखिलेश यादव भी हैं और तृणमूल कांग्रेस की फायरब्रांड महुआ मोइत्रा नए संकल्प के साथ वापस आई हैं। उत्तर प्रदेश के दो लड़के अखिलेश और राहुल ने भाजपा के गढ़ और भारत के सबसे बड़े राज्य में शानदार प्रदर्शन किया, जिससे प्रधानमंत्री और गृह मंत्री अमित शाह को बहुत झटका लगा। हम अब एक असामान्य समय में रह रहे हैं जब सत्ता में बैठे लोग अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत को लोकतंत्र की जननी के रूप में पेश कर रहे हैं, लेकिन घर पर सभी शक्तियों का इस्तेमाल यह देखने के लिए किया जा रहा है कि विपक्षी गठबंधन को अधिकांश मीडिया द्वारा भारत के रूप में संदर्भित नहीं किया जाए। समय बदल जाता है। जो लोग खुद को अपने समय के उत्कृष्ट नेताओं के रूप में पेश करते हैं, उनके चीयरलीडर्स भी उनके पैर मिट्टी के पाते हैं। लेकिन समय ऐसे ही नहीं बीतता और चुनौती का पूरी तरह से, पूरी तरह से सामना करना पड़ता है। यह कोई बच्चों का खेल नहीं है जब पूरी व्यवस्था एक राष्ट्र, एक नेता के विचार को आगे बढ़ाने के लिए संचालित की जाती है, भले ही लोकतंत्र में यह कितना भी अभिशाप क्यों न हो।

राशिफल

मेष राशिः आज का दिन आपके लिए बेहतर रहेगा। आज सरकारी संस्थान से जुड़े लोगों का दिन अच्छा रहेगा, जबकि प्राइवेट काम करने वाले लोगों का दिन व्यस्तता से भरा रहेगा। आज आपको ऑफिस में एक्सट्रा काम करना पड़ सकता है। स्टूडेंट्स के लिए दिन ठीक-ठाक रहेगा, आप कुछ नया सीखेंगे।

वृष राशिः आज का दिन आपके लिए उमंग से भरा रहेगा। जीवनसाथी के साथ आप किसी ट्रिप की प्लानिंग कर सकते हैं। आप उन्हें कोई गिफ्ट दे सकते हैं, आपका दिन ताजगी से भरा रहेगा। आप अच्छे काम में अपना सहयोग दे सकते हैं, इससे समाज में आपका नाम होगा। माता आपसे किसी काम को लेकर सलाह ले सकती है।

मिथुन राशिः आज का दिन आपके लिए बढ़िया है। आज आप किसी प्रॉपर्टी में निवेश करने के बारे में सोच सकते हैं। दोस्त की मदद से आपको किसी अच्छी कम्पनी में नौकरी मिलने के योग हैं। आप लवमेट के साथ मूवी देखने का प्लान करेंगे। आप घर की सुख-सुविधाओं में बढ़ोतरी करेंगे,

कर्क राशिः आज का दिन आपके लिए खुशियों से भरा रहेगा। आज आप पिता का कोई जरूरी काम पूरा करने में सफल होंगे। पिता को आप पर गर्व होगा। छात्रों के लिए दिन अच्छा रहेगा.. आप कम्प्यूटर कोर्स सीखने के बारे में सोच-विचार कर सकते हैं। आज आपको बड़े भाई-बहनों से पूरा सहयोग मिलेगा।

सिंह राशिः आज का दिन आपके लिए फेवरेबल रहने वाला है। आज आपके पास नई जिम्मेदारियां आ सकती हैं, घरवालों के सहयोग से आप हर काम को अच्छे से संभाल लेंगे। आप घर में किसी धार्मिक कार्यक्रम की तैयारी भी करवा सकते हैं। आस-पड़ोस के लोग आपको देखकर खुश होंगे। कोई व्यक्ति आपसे अपने बच्चों के करियर के लिए सलाह ले सकता है, आप उन्हें निराश नहीं करेंगे।

कन्या राशिः आज आपका दिन बेहतर रहेगा। आप किसी धार्मिक कार्य में रुचि लेंगे। ऑफिस का कोई व्यक्ति आपके घर पर आ सकता है, उनके साथ आप कुछ बातें शेयर कर सकते हैं। बच्चे किसी काम में आपकी मदद ले सकते हैं, आप बच्चों का पूरा सहयोग करेंगे। बूटिक का काम कर रही महिलाओं के लिए दिन अच्छा रहेगा। किसी कस्टमर से आपको अच्छा धन लाभ होगा।

तुला राशिः आज का दिन आपके लिए बढ़िया रहने वाला है। आपको अपनी कार्य कुशलता को बढ़ाने की जरूरत है। आज आप करियर को लेकर कोई बड़ा फैसला ले सकते हैं। नये कोर्स में एडमिशन के लिए आपको ज्यादा भागदौड़ करनी पड़ेगी। आज आप जीवनसाथी व बच्चों के साथ शॉपिंग के लिए जायेंगे।

वृश्चिक राशिः आज का दिन आपके लिए ठीक रहेगा। आज बच्चों के किसी काम में आपका ज्यादा खर्च हो सकता है। काम के मामले में आपको अनुभवी लोगों से सम्पर्क बढ़ाने की जरूरत है। आप पूरी मेहनत के साथ आगे बढ़ेंगे, आपको काम में सफलता मिलेगी। किसी की कही-सुनी बातों पर विश्वास करने से आपको बचना चाहिए।

धनु राशिः आज का दिन आपके लिए बेहतरीन रहेगा। अगर आप किसी से अपने दिल की बात कहना चाहते हैं, तो आज का दिन आपके लिए बहुत ही अच्छा रहने वाला है। आप अपने काम पूरी एकाग्रता से करेंगे। जो लोग शादी-शुदा हैं, वो आज कहीं घूमने जा सकते हैं, आपका समय बहुत अच्छा बीतेगा।

मकर राशिः आज का दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहेगा। आज के दिन आपको काम में बड़ी ही सतर्कता बरतनी होगी। इस राशि की जो महिलाएं बिजनेस फ़ील्ड से जुड़ी हैं उनके लिए आज ज्यादा लाभ के योग बन रहे हैं। फल से जुड़े बिजनेस कर रहे लोगों का काम अच्छा चलेगा, आय में वृद्धि होगी।

कुंभ राशिः आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। आज जीवनासाथी से बिजनेस की कोई बात शेयर करने से काम को लेकर आपको कोई अच्छी सलाह मिलेगी। बच्चे आज किसी स्पोर्ट्स एक्टिविटी में भाग ले सकते हैं। आज आप किसी बात में बेवजह उलझे रहेंगे। काफी समय से जॉब की तलाश कर रहे लोगों को किसी कंपनी से जॉब का ऑफर आएगा।

मीन राशिः आज का दिन आपके लिए खुशहाल रहने वाला है। आज आप कोई नया बिजनेस शुरू करने के बारे में सोच सकते हैं। आपको घर के बड़ों से पूरा सपोर्ट मिलेगा, आर्थिक रूप से पिता आपकी मदद करेंगे।परिवार में लोगों के बीच अच्छा ताल-मेल बना रहेगा। शाम को आप परिवार के साथ किसी फंक्शन में जा सकते हैं।

छह महीने पहले जिन्हें कौन अखिलेश वखिलेश कहा गया था, उन्होंने मैन ऑफ द मैच बनकर दिखा दिया

//नीरज कुमार दुबे//

जिन अखिलेश पर समाजवादी पार्टी को मनमाने ढंग से चलाने का आरोप लगता था, उन अखिलेश ने सबको साथ लेकर चलना शुरू किया तो सफलता कदम चूमने लगी। यही नहीं, गठबंधन धर्म का पालन करते हुए अखिलेश यादव ने उदार दिल दिखाया और कांग्रेस को उसकी हैसियत से ज्यादा सीटें दीं। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव का जन्मदिन आज उनकी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता धूमधाम से मना रहे हैं। विभिन्न दलों के नेता भी अखिलेश यादव को जन्मदिन पर बधाइयां दे रहे हैं। अखिलेश यादव के लिए इस बार का जन्मदिन बेहद खास है इसलिए वह बहुत खुश नजर आ रहे हैं। दरअसल इस बार के लोकसभा चुनावों में मैन ऑफ द मैच बनकर उभरे अखिलेश यादव ने अपनी पार्टी को लोकसभा में तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बनवा कर अपनी नेतृत्व क्षमता साबित कर दी है।

संस्थापक मुलायम सिंह यादव के निधन के बाद समाजवादी पार्टी पहली बार पूरी तरह अखिलेश यादव की नीतियों और नेतृत्व में चुनावी मैदान में उतरी थी और उसने बड़ी कामयाबी हासिल की। लोकसभा चुनावों में अखिलेश यादव अपने परिवार के सदस्यों को तो चुनाव जितवाने में सफल रहे ही साथ ही पार्टी को एकजुट कर उन्होंने जिस तरह से हर वर्ग का समर्थन हासिल किया वह अभूतपूर्व था। देखा जाये तो कुछ समय पहले तक चाचा शिवपाल सिंह यादव जैसे अपने लोगों के अलावा बाहरी लोग भी अखिलेश यादव को महत्व नहीं दे रहे थे। याद कीजिये मध्य प्रदेश विधानसभा चुनावों के दौरान जब अखिलेश यादव ने समाजवादी पार्टी के लिए कांग्रेस से कुछ सीटें मांगी थीं तो कमलनाथ ने कहा था- कौन अखिलेश वखिलेश। लेकिन जब मध्य प्रदेश विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की हार हुई तो उसके सुर एकदम से बदल गये और राहुल गांधी सपा मुखिया अखिलेश यादव के साथ नजर आने लगे। यही नहीं, पिछले साल मैनपुरी लोकसभा उपचुनाव से पहले अखिलेश ने जिस तरह चाचा शिवपाल सिंह यादव को साथ लेकर पूरे परिवार को एकजुट किया उससे भी उनकी कामयाबी की राह आसान हुई। जिन अखिलेश यादव पर समाजवादी पार्टी को मनमाने ढंग से चलाने का आरोप लगता था, उन अखिलेश यादव ने सबको साथ लेकर चलना शुरू किया तो सफलता कदम चूमने लगी। यही नहीं, गठबंधन धर्म का पालन करते हुए अखिलेश यादव ने उदार दिल दिखाया और कांग्रेस को उसकी हैसियत से ज्यादा सीटें दीं। साथ ही राष्ट्रीय लोकदल के लिए भी सात सीटें छोड़ दीं। लोकसभा चुनावों से ठीक पहले जब जयंत चौधरी एनडीए के साथ चले गये तब भी अखिलेश यादव निराश नहीं हुए क्योंकि उन्होंने जो सोशल इंजीनियरिंग की थी उसकी सफलता पर उन्हें पूरा भरोसा था। जब चुनाव परिणाम आये तो उन लोगों के चेहरों की हवाइयां उड़ गयीं जो अखिलेश यादव के पीडीए का मजाक उड़ाते थे। लोकसभा चुनाव परिणामों का विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे कि अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी को सिर्फ इसलिए वोट नहीं मिले हैं क्योंकि जनता मोदी और योगी सरकार से नाराज थी। अखिलेश यादव को वोट इसलिए भी मिले हैं क्योंकि जनता उनकी नीतियों से प्रभावित थी। अखिलेश यादव को वोट इसलिए भी मिले हैं क्योंकि मुस्लिमों का पूरा समर्थन उनके साथ आ गया है। भले आजम खान या कोई और मुस्लिम नेता अखिलेश यादव से नाराज दिखा लेकिन आम मुस्लिम अखिलेश यादव के समर्थन में खड़ा नजर आया। अखिलेश यादव को वोट इसलिए भी मिले हैं क्योंकि दलित, ओबीसी या पिछड़े वर्ग का ही नहीं बल्कि सवर्णों का भी अच्छा खासा समर्थन समाजवादी पार्टी को मिला है। लोकसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश का जो परिणाम आया है वह दर्शा रहा है कि जनता ने सिर्फ भाजपा को सबक नहीं सिखाया है बल्कि अखिलेश यादव को सिर आंखों पर भी बैठाया है। जो लोग अखिलेश यादव पर आरोप लगा रहे थे कि वह सनातन धर्म का अपमान करने वालों को बढ़ावा दे रहे हैं उन लोगों को अखिलेश यादव ने अयोध्या की संसदीय सीट जीतकर दिखा दिया। जब राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में जाने का निमंत्रण अखिलेश यादव ने ठुकराया था तो भाजपा का कहना था कि जो राम का नहीं वो किसी काम का नहीं, लेकिन अयोध्या-फैजाबाद की जनता ने अखिलेश यादव की पार्टी को जिताकर भाजपा के आरोपों को खारिज कर दिया और संदेश दिया कि जो काम का है उसे ही जनता पसंद करती है। यही नहीं, जब लोकसभा चुनावों के बीच में ही अखिलेश यादव बार-बार कई संसदीय सीटों पर अपने प्रत्याशी बदल रहे थे तो उन्हें नौसिखिया तक करार दिया जा रहा था। लेकिन चुनाव परिणाम दर्शा रहे हैं कि अखिलेश के वह सभी फैसले सही सिद्ध हुए।

देखा जाये तो पूरे चुनावों के दौरान सपा मुखिया ने जिस तरह अपने गठबंधन के बीच सामंजस्य बनाये रखा, चुनाव के हर चरण के लिए नई नीति अपनाई, अपनी पार्टी को एकजुट रखा, कार्यकर्ताओं को निचले स्तर तक सक्रिय किया, सोशल मीडिया के जरिये अपने चुनाव अभियान को आगे बढ़ाया, जनता के बीच अपने घोषणापत्र की बातों को पहुँचाया और भाजपा को त्वरित तथा तगड़ा जवाब दिया उससे अखिलेश यादव उत्तर प्रदेश की राजनीति के नये स्टार के रूप में उभरे हैं। देखा जाये तो जब अखिलेश यादव पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे तब उसमें उनका अपना कोई योगदान नहीं था क्योंकि अपने पिता की बदौलत उन्हें वह कुर्सी मिली थी। अपने बलबूते अखिलेश यादव को सबसे बड़ी राजनीतिक सफलता इस बार के लोकसभा चुनावों में मिली है। इस बार समाजवादी पार्टी ने लोकसभा चुनाव में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 37 सीटें जीत कर भाजपा का मजा खराब कर दिया है। यही नहीं, उत्तर प्रदेश में कांग्रेस का जो शानदार प्रदर्शन रहा है वह भी समाजवादी पार्टी से गठबंधन के बलबूते ही संभव हो पाया है। इसके अलावा पश्चिमी उत्तर प्रदेश, जहां सपा को कमजोर समझा जाता था वहां भी पार्टी का जोरदार प्रदर्शन दर्शा रहा है कि पूरे उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव का सिक्का चल गया है। देखना होगा कि आगामी विधानसभा उपचुनावों में सपा का प्रदर्शन कैसा रहता है।

सैलानियों का हब बन रहा है उत्तर प्रदेश

//उमेश चतुर्वेदी//

दुनिया में जहां भी पर्यटन ज्यादा है, वहां सबसे ज्यादा सैलानी सैर-सपाटे के लिए आते हैं। जबकि उत्तर प्रदेश आने वाले ज्यादातर पर्यटक आध्यात्मिक पर्यटन के लिए आए थे। साल 2023 में अकेल काशी आने वाले तीर्थयात्रियों और सैलानियों की संख्या 10 करोड़ से अधिक थी। देश का दिल है उत्तर प्रदेश। भगवान राम और कान्हा की जन्मस्थली इसी प्रदेश में हैं। बाबा भोलेनाथ की नगरी, तीन लोकों में न्यारी काशी नगरी भी इसी प्रदेश में है। नाथ संप्रदाय के प्रमुख गुरू गोरखनाथ की नगरी भी इसी प्रदेश में है। अट्ठासी हजार ऋषियों ने जिस नैमिषारण्य में बैठकर देवताओं में श्रेष्ठ कौन है, जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न पर विचार किया था, वह तीर्थस्थल भी इसी प्रदेश में है। और तो और, तीर्थों का तीर्थ प्रयागराज भी उत्तर प्रदेश में ही है। भगवान बुद्ध ने जिस सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया था, वह भी यहीं है। जिस कुशीनगर में उन्होंने निर्वाण लिया, वह भी यहीं है। तीर्थ स्थलों की जहां भरमार हो, वहां सैलानी और तीर्थयात्री ना आएं, तो अचम्भा ही माना जाएगा।

ऐसा अचम्भा यहां होता रहा है। लेकिन सात साल के योगी शासन में यहां की स्थिति ऐसी बदली कि अब यहां तीर्थयात्रियों की भरमार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वजह से वाराणसी में विकसित काशी विश्वनाथ कोरीडोर के बाद तो वाराणसी भी पर्यटन और तीर्थ के मानचित्र में नए सिरे से उभर आया है। यही वजह है कि यहां सैलानियों की बाढ़ आ गई है। राज्य सरकार ने हाल ही में जो आंकड़े जारी किए हैं, उसके अनुसार पिछले साल राज्य में 48 करोड़ पर्यटक आए थे। यह संख्या राज्य की कुल आबादी की दोगुनी से दो करोड़ ज्यादा है। दुनिया में जहां भी पर्यटन ज्यादा है, वहां सबसे ज्यादा सैलानी सैर-सपाटे के लिए आते हैं। जबकि उत्तर प्रदेश आने वाले ज्यादातर पर्यटक आध्यात्मिक पर्यटन के लिए आए थे। साल 2023 में अकेल काशी आने वाले तीर्थयात्रियों और सैलानियों की संख्या 10 करोड़ से अधिक थी। जबकि मथुरा-वृंदावन में साढ़े सात करोड़ और अयोध्या में पांच करोड़ से ज्यादा पर्यटक पिछले साल आए। 500 वर्षों के बाद अयोध्या में श्रीराम के विराजमान होने के बाद यहां आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या कई गुना बढ़ गई है। यहां प्रतिदिन करीब डेढ़ से दो लाख पर्यटक आ रहे हैं। इन तथ्यों से राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का उत्साहित होना स्वाभाविक है। तीर्थयात्रियों और आम सैलानियों में एक अंतर होता है। आम सैलानियों की तुलना में तीर्थयात्री प्रकृति और ईश्वर के प्रति अलग तरह की आस्था रखते हैं। शायद यही वजह है कि अब योगी सरकार राज्य में इको टूरिज्म की संभावनाओं में राज्य का भविष्य देखने लगी है। ऐसी संभावनाओं वाले तीर्थस्थलों में सबसे ज्यादा लखनऊ के नजदीक हैं। जिनमें नैमिषारण्य और चित्रकूट हैं। इसी तरह शुकतीर्थ, विंध्यवासिनी धाम, मां पाटेश्वरी धाम, मां शाकंभरी धाम सहारनपुर, बौद्ध तीर्थ स्थल कपिलवस्तु, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, संकिसा, जैन व सूफी परंपरा से जुड़े स्थलों में भी आध्यात्मिक तीर्थाटन की संभावनाएं ज्यादा है। उत्तर प्रदेश में मानव सृष्टि और जीव सृष्टि के उद्गम स्थल के भी प्रमाण मिलते हैं। सोनभद्र के फासिल्स पार्क की आयु उतनी ही है, जितनी जीव सृष्टि की है। लगभग डेढ़ सौ करोड़ वर्ष पूर्व के फासिल्स वहां पाए जाते हैं। ऐसे अनेक स्थल, प्राकृतिक सरोवर, ताल यहां मिलेंगे। यहां का करीब 15 हजार वर्ग किमी का क्षेत्रफल केवल वन संपदा है। यूपी में पौराणिक काल के वन हैं। यूपी के तराई क्षेत्र के बहराइच, लखीमपुर खीरी, श्रावस्ती, बलरामपुर और पीलीभीत में वन सुरक्षित हैं। इन वनों में भी घूमने वालों का अब तांता लगा रहता है। इसी तरह चूका, दुधवा, पीलीभीत टाइगर रिजर्व आने वाले टूरिस्टों की भीड़ बढ़ रही है। इसे देखते हुए चित्रकूट व बिजनौर के अमानगढ़ टाइगर रिजर्व को का विकास किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में आध्यात्मिक पर्यटन के साथ ही के साथ ही हैरिटेज व ईको टूरिज्म की संभावनाओं को देखते हुए उनके प्रति आकर्षण बढ़ाने की राज्य की ओर से कोशिश तेज की जा चुकी है। उत्तर प्रदेश आने वाले तीर्थयात्रियों और सैलानियों का मनोरंजन हो, उनका ज्ञान बढ़े, अतीत व इतिहास के साथ उन्हें जुड़ने का अवसर प्राप्त हो, इस दिशा में भी काम किए जा रहे हैं। इसे देखते हुए राज्य में उत्तर प्रदेश ईको टूरिज्म डेवलपमेंट बोर्ड गठित किया जा चुका है। इस दिशा में काम को आगे बढ़ाते हुए लखनऊ में कुकरैल के पास नाइट सफारी बनाया जा रहा है। इसके पहले लगभग विलुप्त हो चुकी कुकरैल नदी को जीवित करने की तैयारी है। कभी कुकरैल गोमती की सहायक नदी थी। कुकरैल नदी को लोगों ने कब्जा करके नाला बनाकर रख दिया है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद इस पर हुए आठ हजार से अधिक अनधिकृत कब्जों को हटा जा चुका है। इसका असर दिख रहा है कि जब गर्मी में जल स्रोत सूख रहे थे, तब कुकरैल में जल के नए स्रोत बन रहे थे। ध्यान रखना चाहिए कि जब सैलानी आते हैं तो अनेक लोगों के लिए रोजगार सृजन होता है। ईको टूरिज्म के क्षेत्र में लोगों ने अलग-अलग कार्य प्रारंभ किए हैं। सोहगीबरवा, दुधवा, चूका, पीलीभीत टाइगर रिजर्व के क्षेत्र में लोग आ रहे हैं और प्रकृति को देखकर खुद को समझ रहे हैं। तीर्थयात्रियों और सैलानियों को लुभाने के लिए तीर्थस्थलों और पर्यटन केंद्रों की कनेक्टिविटी बढ़ाने की कोशिश हो रही है। लखीमपुर में पुरानी एयरस्ट्रिप का एयरपोर्ट के रूप में विकास करने की तैयारी है। पिछले साल यहां के लिए होलीडे ट्रेन चलाई गई थी। इसके साथ ही जगह-जगह स्थानीय निवासियों को गाइड के रूप में प्रशिक्षित करने की तैयारी है। इससे उन्हें रोजगार मिलेगा और तीर्थयात्रियों और सैलानियों का ज्ञानवर्धन भी होगा। पर्यटन न केवल मनोरंजन का माध्यम बन सकता है, बल्कि आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देने में भी मददगार हो सकता है।

इसे देखते हुए राज्य के हैरिटेज टूरिज्म स्थलों मसलन बुंदेलखंड के किलों या जहां-तहां पड़ीं ऐतिहासिक इमारतों का ना सिर्फ विकास हो रहा है तो कहीं- कहीं उन्हें होटल या पर्यटन केंद्र के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है या उनका विकास किया जा रहा है। सैलानियों की सहूलियत और स्थानीय लोगों के रोजगार को बढ़ावा देने के लिहाज से काशी, अयोध्या, मथुरा-वृंदावन में स्प्रिचुअल दृष्टि से होम स्टे की व्यवस्था करने की तैयारी है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार सृजन की संभावना बनेगी। बांदा के कलिंजर, जालौन व बस्ती में ऐसे कार्यक्रम प्रारंभ हो चुके हैं। पीलीभीत, खीरी, बहराइच, सोनभद्र, चंदौली, चित्रकूट समेत कई दूसरे जनपदों में भी ऐसी संभावना मूर्त रूप ले सकती है। राज्य के इको, स्पिरिचुअल और हैरिटेज तीनों तरह के पर्यटन को एक साथ जिस तरह विकसित किया जा रहा है, एक जनपद, एक उत्पाद को जिस तरह बढ़ावा दिया जा रहा है, अगर ईमानदारी पूर्वक इन योजनाओं पर काम हो, पूरे सूबे में सैलानियों की बाढ़ और बढ़ेगी। हर आने वाला सैलानी जब यूपी आएगा तो यूपी को कुछ देकर ही जाएगा। यूपी की आर्थिकी को नई गति देगा। घनी जनसंख्या वाले राज्य की अर्थव्यवस्था को तेजी देगा। इसके लिए राज्य की सड़कों को और बेहतर बनाना पड़ेगा। कानून-व्यवस्था के मोर्चे पर रह गई खामियों को दूर करना होगा और लोगों को भरोसा दिलाना होगा।

तस्वीरों की दुनिया

मानसून में फैशन के लिए नायलॉन और पॉलिएस्टर का इस्तेमाल करती हैं विदिशा श्रीवास्तव।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा, सांसद बांसुरी स्वराज और अन्य नेताओं के साथ नई दिल्ली में कर्नाटक संघ आर.के. पुरम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम को सुनते हुए।

आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने नई दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया।

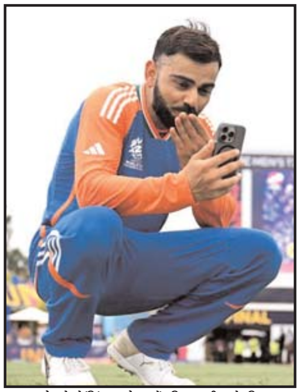

बारबाडोस के केंसिंग्टन ओवल में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आईसीसी पुरुष टी20 क्रिकेट विश्व कप फाइनल मैच में टीम की जीत के बाद वीडियो कॉल पर भारत के विराट कोहली।

भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा अपनी बेटी के साथ बारबाडोस के केंसिंग्टन ओवल में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप के फाइनल क्रिकेट मैच में भारत की जीत का जश्न मनाते हुए।

असम में बाढ़ से बदतर हुए हालात, 6 लाख से अधिक लोग प्रभावित, भारी बारिश की चेतावनी जारी

असम, 02 जुलाई [एजेंसी]।

बारिश का इतंजार कर रहे लोगों के चहरों तो बारिश से खिल गए लेकिन पूर्वोत्तर इसकी मार झेल रहा है। पिछ्ले एक माह से बाढ़ से जूझ रहे असम और अरुणाचल में लोग अस्थायी कैंपों में रह रहे हैं। असम में बाढ़ की स्थिति और बदतर होती जा रही है। असम में करीब 3 लाख से अधिक लोग प्रभावित हैं और अब तक 60 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है।ये वीडिओ असम के मोरीगांव की है। जहां ब्रह्मपुत्र नदी का पानी गांवों में फैलने से सोमवार को बाढ़ की स्थिति और खराब हो गई। इस वीडियो में आप देख सकते हैं कि किस तरह से छोट-छोटे बच्चे पानी में डूबे अपने घरों से कीमती सामान बाहर निकाल रहे हैं।भारी बारिश और बाढ़ की स्थिति के कारण पशु फंसे हुए हैं, जिससे वाहनों की चपेट में आने से चोट लगने और मौत की संभावना बनी हुई है, इसलिए अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट, कालीबोर ने आदेश जारी किया है।किसी भी प्रकार के वाहनों की गति एनएच 715 (पुराने एनएच 37) के खंड पर 20 या 40 किमी प्रति घंटे से अधिक नहीं होनी चाहिए।भारी बारिश के कारण बाढ़ की स्थिति को देखते हुए गोलाघाट के एसपी ने आदेश जारी किया है। जिसमें कहा गया है कि सभी यात्री वाहन, निजी और व्यावसायिक दोनों, को हर आधे घंटे में पुलिस और बल के कर्मचारियों द्वारा संचालित की जाने वाली सख्ती से नियंत्रित गति से चलने की अनुमति दी जाएगी। पायलट वाहन बागोरी बॉर्डर और पनबारी में तैनात रहेंगे।

वे नागांव पुलिस और वन कर्मचारियों के साथ समन्वय करेंगे। असम में बाढ़ की स्थिति बद्तर होती जा रही है और जलस्तर बढ़ने की वजह से काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और टाइगर रिजर्व में स्थित 233 वन शिविरों में से 26 प्रतिशत से अधिक जलमग्न हो गए हैं। वहीं भारत-चीन सीमा पर भी कई इलाकों से सड़क मार्ग का संपर्क कट गया है। असम राज्य आपदा प्रबंधन अथॉरिटी के मुताबिक बाढ़ प्रभावित जिलों की संख्या 12 से बढ़कर 19 हो गई है। ईटानगर में भारी बारिश की वजह से 2 से 6 जुलाई तक स्कूलों को बंद करने का आदेश दिया गया है। पूर्वी कामेंग जिले में कुरुंग नदी पर बना पुल बाढ़ में बह गया। इसके अलावा कई घर भी बाढ़ की चपेट में आ गए। असम में लगभग 8 हजार लोगों को राहत शिविरों में शरण लेनी पड़ी है। वहीं, तिनसुकिया जिले में सबसे ज्यादा 35 लोगों की मौत हो गई है।रिपोर्ट के मुताबिक काजीरंगा वन्य जीव अभयारण्य का बड़ा हिस्सा जलमग्न हो गया है और बड़ी संख्या में जानवर ऊंचे स्थान की तलाश में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-715 पार कर पूर्वी कार्बी आंगलोंग जिले के दक्षिणी हिस्से की ओर जा रहे हैं। हालांकि, बाढ़ या सड़क पार करने के दौरान किसी जानवर की मौत की खबर नहीं है। असम में बाढ़ की स्थिति गंभीर बनी हुई है, राज्य के 19 जिलों में छह लाख से अधिक लोग प्रभावित हैं, जबकि बारिश से संबंधित घटनाओं में 45 लोगों की मौत हो गई है। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, कम से कम आठ नदियाँ खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं, जिसमें ब्रह्मपुत्र नदी जोरहाट जिले के नेमाटीघाट में अपने उच्चतम बाढ़ स्तर को पार कर गई है।

असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के बुलेटिन में कहा गया है कि NDRF, SDRF, भारतीय सेना, भारतीय वायु सेना और स्थानीय प्रशासन सहित कई एजेंसियां बचाव अभियान में लगी हुई हैं। बुलेटिन में कहा गया है कि कुल 6,44,128 लोग बाढ़ से प्रभावित हैं, क्योंकि कामरूप, गोलाघाट, माजुली, लखीमपुर, करीमगंज, कछार, धेमाजी, मोरीगांव, उदलगुड़ी, डिब्रूगढ़, तिनसुकिया, नागांव, शिवसागर, दारंग, नलबाड़ी, सोनितपुर, तामुलपुर, विश्वनाथ और जोरहाट बाढ़ के पानी में डूब गए हैं।

अनुप्रिया पटेल की साख पर आई आंच तो बीजेपी की लगाई क्लास

लखनऊ, 02 जुलाई [एजेंसी]।

अपना दल (एस) की अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल की 2024 के लोकसभा चुनाव में सियासी जमीन क्या हिली, उन्हें दलित, कुर्मी पिछड़े सब याद आने लगे हैं। 2019 में मिर्जापुर लोकसभा सीट का चुनाव अनुप्रिया ने करीब दो लाख बत्तीस हजार वोटों के अंतर से जीता था, लेकिन 2024 में जीत का अंतर 37 हजार वोटों के करीब सिमट गया। ऐसा होते ही अनुप्रिया फिर से अपनी साख लौटाने के लिये उसी बीजेपी को घेर रही हैं जिसकी मोदी सरकार में वह और योगी सरकार में उनके पति मंत्री पद की शोभा बढ़ा रहे हैं। अपनी खोई हुई जमीन फिर से हासिल करने के लिये अनुप्रिया ने ओबीसी व एसटी के लिए आरक्षित पदों पर भर्ती को लेकर जो सवाल खड़े किये वह उनके सियासी सुर्खियां बटोरने का प्रयास के अलावा कुछ नहीं है, जबकि हकीकत यह है कि इसके पीछे उनकी कुर्मी वोट बैंट के खिसकने की घबराहट को एक बड़ी वजह माना जा रहा है। सियासी गलियारों में इस बात की भी चर्चा है कि खुद को अपनी जाति का एकमात्र नेता मान चुकीं अनुप्रिया को इस बार लोकसभा चुनाव में कड़े संघर्ष में बमुश्किल जीत मिली थी, उससे वह काफी दबाव में हैं।दरअसल, लोकसभा चुनाव में उन्हें अपनी परंपरागत सीट पर अनुप्रिया को बड़ी मशक्कत और कड़े संघर्ष में जीत मिली थी, वहीं, राबर्टगंज सीट उनके हाथ से निकल गई। भाजपा ने अपना दल को दो ही सीटें दी थीं।

इसके अलावा अनुप्रिया द्वारा एक दर्जन से अधिक सीटों पर कुर्मी जाति का प्रभाव होने का दावा किया जा रहा है, उनमें से अधिकांश सीटों पर भाजपा को पराजय का सामना करना पड़ा है। भाजपा द्वारा परिणामों की समीक्षा में यह बात सामने आने के बाद से ही अनुप्रिया एनडीए में अपनी साख बचाने को लेकर परेशान थीं और इसी लिये वह दबाव की राजनीति कर रही हैं।

ये अलग बात है कि कुर्मी बहुल सीटों पर हार के बावजूद भी भाजपा नेतृत्व ने उनको न सिर्फ केंद्र में फिर से मंत्री बनाया, बल्कि उन्हें वह अहमियत भी दी है, जो पहले था। इसके बावजूद अनुप्रिया द्वारा ओबीसी-एसटी वर्ग के लिए आरक्षित पदों पर भर्ती पर सवाल उठाना भाजपा के लिए हैरानी का सबब बन गया है। खैर, अनुप्रिया के इस सियासी कदम का उन्हें आगे क्या फायदा होगा, यह तो आने वाला वक्त बताएगा, लेकिन इतना जरूर है कि उन्होंने इस मुद्दे को उछालकर अपनी बिरादरी पर कमजोर होती पकड़ को फिर से मजबूत करने की कोशिश की है। वहीं, दूसरी ओर से अनुप्रिया के इस कदम को दबाव की राजनीति के तौर पर भी देखा जा रहा है। सूत्रों का कहना है कि चुनाव परिणाम में कुर्मी वोट बैंक के खिसकने के बाद से ही अनुप्रिया को यह चिंता सताने लगी थी कि अगर एक बार वोट बैंक खिसका तो उसे दुबारा वापस पाना पार्टी के लिए कड़ी चुनौती होगी।

राज्य में नेतृत्व परिवर्तन के मुद्दे पर पार्टी आलाकमान के फैसले का पालन करूंगा: सीएम सिद्धरमैया

बैंगलुरू, 02 जुलाई [एजेंसी]।

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने सोमवार को कहा कि राज्य में अगर नेतृत्व परिवर्तन पर पार्टी आलाकमान कोई फैसला लेता है, तो वह उसका पालन करेंगे। मुख्यमंत्री का यह बयान पार्टी के भीतर जारी खींचतान के बीच आया है। वोक्कालिगा समुदाय के एक प्रतिष्ठत महंत ने पिछले सप्ताह सार्वजनिक रूप से सिद्धरमैया से पद छोड़ने का आग्रह किया था, ताकि उपमुख्यमंत्री डी.के.शिवकुमार के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। विश्व वोक्कालिगारा महासंस्थान मठ के महंत चंद्रशेखरनाथ स्वामीजी की अपील के बारे में संवाददाताओं द्वारा पूछे गए सवाल पर सिद्धरमैया ने कहा, ''यह सार्वजनिक चर्चा का विषय नहीं है। आलाकमान जो भी फैसला करेगा, हम उसका पालन करेंगे।'' मुख्यमंत्री ने कहा, ''मैं स्वामीजी के बयान पर टिप्पणी नहीं करना चाहता। हम राष्ट्रीय पार्टी हैं। एक आलाकमान है।'' इस बीच, शिवकुमार ने नेताओं को चेतावनी देते हुए कहा कि वे नेतृत्व परिवर्तन और उप मुख्यमंत्री के कई पद सृजित करने के संबंध में बयान न दें। उन्होंने कहा, ''अगर कोई सीमा लांघता है, तो पार्टी कार्रवाई करेगी।''

सिद्धरमैया के करीबी माने जाने वाले कुछ मंत्रियों ने लिंगायत, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यक समुदाय से भी उपमुख्यमंत्री बनाने की मांग है। कुछ लोग इसे शिवकुमार के राजनीतिक पर कतरने की कवायद मान रहे हैं, जो प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भी हैं। शिवकुमार वोक्कालिगा समुदाय से आते हैं और फिलहाल सिद्धरमैया सरकार में उपमुख्यमंत्री के पद पर आसीन हैं।

मेरठ में वकीलों ने फल विक्रेता को पीटा, आम पर पेशाब छिड़कने का आरोप, जब सबूत मांगे तो...

मेरठ, 02 जुलाई [एजेंसी]।

आम बेच रहे फल विक्रेता को वकीलों ने पिटाई कर दी। उसपर आम पर पेशाब छिड़कने का आरोप लगाया है। इस दौरान फल विक्रेता माफी मांगता व अपने जमीन पर पड़े आम को उठाता दिखाई दे रहा है। मारपीट का वीडियो इंटरनेट मीडिया पर बहु प्रसारित हो रहा है। प्रसारित वीडियो में कचहरी में मुस्लिम समुदाय का अधेड़ व्यक्ति आम बेचता दिख रहा है। वहां अधिवक्ता की ड्रेस में खड़े कुछ व्यक्ति उसपर आम पर मूत्र छिड़कने का आरोप लगा रहे हैं।

एक व्यक्ति की ओर इशारा कर वह कह रहे हैं, इसने आम विक्रेता को ऐसा करते देखा है। आम विक्रेता के सारे आम जमीन पर पड़े हैं और वह हाथ जोड़कर उन्हें समेटने के साथ ही वीडियो बना रहे युवक से ऐसा नहीं करने को कह रहा है। हालांकि, दैनिक जागरण ऐसे किसी वीडियो की पुष्टि नहीं करता। इंस्पेक्टर सिविल लाइंस ने बताया कि वीडियो कचहरी में पोस्ट आफिस के पास का है। फल विक्रेता घटना के बाद अपना ठेला लेकर चला गया। उसने पुलिस या किसी अन्य से कोई शिकायत नहीं की है। मौके पर जाकर जानकारी की तो लोगों ने आम पर मूत्र छिड़कने के आरोप लगाए। इसका प्रमाण या कोई वीडियो मांगी तो किसी ने नहीं दी। प्रसारित वीडियो के आधार पर जांच की जा रही है।

पालघर में टक्कर के बाद ऑटोरिक्शा पलटा, स्कूली छात्रा की मौत, छह घायल

मुंबई। महाराष्ट्र के पालघर जिले के डहाणू-जव्हार मार्ग पर सोमवार को एक ऑटोरिक्शा और मोटरसाइकिल के बीच हुई टक्कर में 14 साल की एक स्कूली छात्रा की मौत हो गयी, जबकि छह अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। पुलिस अधिकारी के मुताबिक यह दुर्घटना सुबह चारोटी गांव के पास हुई जब ऑटोरिक्शा बीच रास्ते में रुका और विपरीत दिशा से आ रहा दोपहिया वाहन उससे जा टकराया। पालघर पुलिस के अधिकारी ने कहा, ''ऑटोरिक्शा पलटने से उसमें सवार स्कूल जा रही संगीता डोकफोड़े की मौत हो गई।

भारतीयों को जल्द रिहा करे पाकिस्तान... भारत ने सौंपी पाक जेल में बंद असैन्य कैदियों-मछुआरों की सूची

नईदिल्ली, 02 जुलाई [एजेंसी]।

भारत और पाकिस्तान ने एक-दूसरे की जेलों में बंद असैन्य कैदियों और मछुआरे की सूची सोमवार को साझा की। विदेश मंत्रालय ने बताया कि भारत के निरंतर प्रयासों की बदौलत 2014 से अब तक 2639 भारतीय मछुआरों और 71 असैन्य कैदियों को को पाकिस्तान से वापस लाया गया है। दोनों देश 2008 के द्विपक्षीय समझौते के तहत वर्ष में दो बार एक जनवरी और एक जुलाई को इस तरह की सूची साझा करते हैं। विदेश मंत्रालय के अनुसार भारत ने पाकिस्तान को अपनी जेलों में बंद 366 असैन्य कैदियों और 86 मछुआरों की सूची दी है। ये कैदी पाकिस्तानी हैं या इन्हें पाकिस्तानी माना जाता है। इसी तरह अपनी जेलों में बंद 43 असैन्य कैदियों और 211 मछुआरों के नाम साझा किए हैं जो भारतीय हैं या जिनके भारतीय होने की संभावना है। भारत सरकार ने पाकिस्तान की हिरासत से असैन्य कैदियों, मछुआरों और उनकी नौकाओं तथा लापता भारतीय रक्षा कर्मियों की शीघ्र रिहाई और स्वदेश भेजने का आह्वान किया है। मंत्रालय ने कहा, पाकिस्तान से उन 185 भारतीय मछुआरों और असैन्य कैदियों की रिहाई और स्वदेश वापसी में तेजी लाने को कहा गया है, जिनकी सजा पूरी हो चुकी है। पाकिस्तान से यह भी कहा गया है कि वह उन 47 असैन्य कैदियों और मछुआरों को तत्काल राजनयिक पहुंच प्रदान करे, जिन्हें भारतीय नागरिक माना जाता है। पाकिस्तान से सभी भारतीय असैन्य कैदियों और मछुआरों की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित करने को भी कहा गया है। भारत ने पाकिस्तान से भारत की जेल में मौजूद 75 पाकिस्तानी असैन्य कैदियों और मछुआरों की नागरिकता सत्यापन प्रक्रिया में तेजी लाने का आग्रह किया है। पाकिस्तान से नागरिकता की पुष्टि नहीं होने के कारण इन कैदियों को स्वदेश भेजने की प्रक्रिया रुकी हुई है। पाकिस्तान ने भारत को 1965 और 1971 के युद्धों में कथित तौर पर लापता हुए सैनिकों की सूची भी सौंपी।

नए आपराधिक कानून क्रियान्वयन के मुद्दों से निपटने के लिए नियंत्रण कक्ष स्थापित, कानूनी विशेषज्ञ करेंगे मदद

नईदिल्ली, 02 जुलाई [एजेंसी]।

देशभर में तीन नए आपराधिक कानून लागू होने के बाद विभिन्न राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों के पुलिस विभागों तथा न्यायिक अधिकारियों के मुद्दों को हल करने के लिए पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो (बीपीआरडी) के मुख्यालय में एक केंद्रीय नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है। बीपीआरडी पर देश में बेहतर पुलिस व्यवस्था के लिए नीतियां बनाने का जिम्मा है। यह गृह मंत्रालय (एमएचए) के अधीन काम करता है। बीपीआरडी को भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) और भारतीय साक्ष्य अधिनियम (बीएसए) की तैयारी और क्रियान्वयन के लिए नोडल विभाग बनाया गया है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि बीपीआरडी में केंद्रीय नियंत्रण कक्ष काफी समय से क्रियाशील है और यह तीनों आपराधिक कानूनों को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने के लिए विभिन्न राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और केंद्रीय पुलिस संगठनों को मार्गदर्शन दे रहा है।

उन्होंने बताया कि नियंत्रण कक्ष में बीपीआरडी, पुलिस और कानूनी संस्थाओं के तकनीकी और कानूनी विशेषज्ञ मौजूद हैं, यहां तक कि गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री भी इस नियंत्रण कक्ष में समीक्षा कर रहे हैं।

नीट यूजी की ओएमआर शीट की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में दो हफ्ते बाद सुनवाई

अवकाश पीठ करेगी सुनवाई

नईदिल्ली, 02 जुलाई [एजेंसी]।

सुप्रीम कोर्ट ने विवादों में घिरे नीट-यूजी, 2024 में ओएमआर शीट में हेरफेर का आरोप लगाने वाली याचिका सोमवार को दो सप्ताह बाद सुनवाई के लिए तय की। याचिका जस्टिस सीटी रविकुमार और जस्टिस मनोज मिश्रा की अवकाश पीठ के समक्ष सुनवाई के लिए आई।

सुप्रीम कोर्ट ने पांच मई को आयोजित नीट-यूजी परीक्षा में ओएमआर शीट में हेरफेर करने में राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) के अधिकारियों की संलिप्तता का आरोप लगाने वाली याचिका पर दो सप्ताह बाद सुनवाई के लिए तय की। मेडिकल प्रवेश परीक्षा देने वाले याचिकाकर्ता के वकील ने आरोप लगाया कि उसकी ओएमआर शीट बदल दी गई थी। पीठ ने वकील से कहा कि याचिकाकर्ता 23 जून को हुई दोबारा परीक्षा में शामिल होने की अनुमति मांग रहा है।

कनिष्क हमले के पीड़ितों को संसद ने दी श्रद्धांजलि, ओम बिरला ने कहा ऐसे आंतकी कृत्यों को कभी भी माफ नहीं किया जा सकता

नईदिल्ली, 02 जुलाई [एजेंसी]।

एअर इंडिया के कनिष्क विमान में 39 साल पहले हुए बम विस्फोट में जान गंवाने वाले लोगों को संसद ने सोमवार को श्रद्धांजलि दी। संसद के दोनों सदनों ने कनिष्क आतंकी हमले के पीड़ितों की याद में मौन रखा।लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा, यह घटना इस बात की याद दिलाती है कि दुनिया को आतंकवाद और उग्रवाद के प्रति शून्य-सहिष्णुता दृष्टिकोण क्यों अपनाना चाहिए। ऐसे कृत्यों को कभी भी माफ नहीं किया जा सकता या उचित नहीं ठहराया जा सकता। राज्यसभा में सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा, अफसोस की बात है कि कनिष्क हमले के पीड़ितों को कभी भी न्याय पूरी तरह से नहीं मिल पाया।23 जून 1985 को कनाडा के 280 नागरिकों सहित 329 निर्दोष लोगों को जान गंवाना पड़ा था, जब एअर इंडिया की फ्लाइट एआइ-182 में लगाया गया बम उड़ान के दौरान फट गया था।बम विस्फोट से विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ था। इनमें अधिकतर भारतवंशी थे। संसद ने 12 जून, 2024 को हुई कुवैत अग्नि त्रासदी के पीड़ितों के प्रति भी संवेदना जताई। इस दुर्घटना में भारतीयों समेत कई लोगों को जान गंवानी पड़ी थी, वहीं कई अन्य घायल हो गए थे। सांसदों ने ईरान राष्ट्रपति सैय्यद इब्राहिम रईसी, ईरान के विदेश मंत्री एच. अमीर-अब्दुल्लाहियन, तंजानिया के पूर्व राष्ट्रपति अली हसन मविनी, मलावी के उपराष्ट्रपति सौलोस क्लास चिलिमा को भी श्रद्धांजलि दी।

तृणमूल के गुंडों को ममता की मिली छूट, लागू करो शरिया कानून, कोड़ों से पिटाई की घटना पर आक्रामक हुई भाजपा

नईदिल्ली, 02 जुलाई [एजेंसी]।

बंगाल के उत्तरी दिनाजपुर में बीच सड़क पर महिला को कोड़े मारने की घटना पर भाजपा ने आक्रामक रुख दिखाया है। ममता राज की तुलना जंगलराज से करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने तृणमूल कांग्रेस के गुंडों को शरिया कानून लागू करने की छूट दे दी है।

ममता बनर्जी से इस्तीफे की मांग करने के साथ ही भाजपा की ओर से प्रश्न उठाया गया है कि संविधान की प्रति हाथ में लेकर घूमने वाले आईएनडीआईए नेता राहुल गांधी, सोनिया गांधी, मल्लिकार्जुन खरगे, अखिलेश यादव और अरविंद केजरीवाल चुप क्यों हैं। भाजपा प्रवक्ता गौरव भाटिया ने सोमवार को पत्रकारों से बातचीत में बंगाल में महिला के साथ हुए दुर्व्यवहार की भर्त्सना करते हुए राज्य की कानून व्यवस्था को लेकर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि यह कहना गलत नहीं होगा कि जंगल-राज कैसा होता है। ममता-राज जैसा होता है। मुख्यमंत्री से इस्तीफे की मांग करते हुए उन्होंने कहा कि बंगाल में जंगलराज का एक और दुर्भाग्यपूर्ण उदाहरण सामने आया है। महिला के साथ दुर्व्यवहार हुआ, खुलेआम कोड़े से उसकी पिटाई की गई, जो वायरल वीडियो में साफ स्पष्ट हो रहा है।उत्तर दिनाजपुर में तृणमूल कांग्रेस के नेता ताजमुल उर्फ जेसीबी भारतीय संविधान में नहीं, बल्कि ममता बनर्जी के इशारे पर तालिबानी अंदाज में त्वरित न्याय करने में विश्वास रखते हैं। ममता ने अपनी पार्टी के गुंडों को खुली छूट दे दी है कि शरिया कानून लागू करो, तालिबान का राज है। भाटिया ने आरोप लगाया कि ताजमुल को ममता बनर्जी सरकार से संरक्षण मिल रहा है। तृणमूल के विधायक हमीद उल रहमान ममता बनर्जी की सोच को आगे बढ़ा रहे हैं और मुस्लिम देशों के नियम के तहत किसी भी महिला को सार्वजनिक स्थान पर कोड़े मारने को न्यायोचित बता रहे हैं। संदेशखाली ने शाहजहां दिया और उत्तरी दिनाजपुर ने औरंगजेब ताजमुल दिया।

भाजपा प्रवक्ता ने विपक्ष को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि संविधान की प्रति हाथ में लेकर घूमने वाले विपक्षी आईएनडीआईए के नेता बंगाल में हो रहे तालिबानी न्याय से सहमत हैं क्या। कांग्रेस समेत विपक्षी गठबंधन के नेता संविधान पकड़ कर घूमते हैं, मगर बंगाल में संविधान की मूल भावना को तार-तार कर महिला अस्मिता के साथ खिलवाड़ होने पर विरोध नहीं करते हैं। भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने भी घटना के लिए ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली राज्य सरकार की कड़ी आलोचना की। पूनावाला ने आरोप लगाया कि महिला व एक अन्य को कोड़े से पीटने वाला वहां के तृणमूल विधायक का करीबी सहयोगी है। उन्होंने कहा कि तृणमूल विधायक ने आरोपित का बचाव करते हुए कहा है कि जिस महिला की पिटाई की गई, उसका चरित्र सही नहीं था, यह बेहद शर्मनाक है। टीएमसी का मतलब तालिबानी मानसिकता और संस्कृति है। बंगाल की सड़कों पर दिनदहाड़े तालिबानी शैली में कंगारू कोर्ट न्याय का क्रूर वीडियो देखकर पूरा देश स्तब्ध है।

पीठासीन अधिकारी के पास नहीं होता माइक का स्विच बिरला-धनखड़ ने विपक्ष के आरोपों पर दिया दो टूक जवाब

नईदिल्ली, 02 जुलाई [एजेंसी]।

लोकसभा स्पीकर ओम बिरला और राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने सोमवार को विपक्षी सदस्यों के उन आरोपों पर आपत्ति जताई कि सदन में बोलते समय उनके माइक बंद कर दिए जाते हैं। दोनों ने कहा कि पीठासीन अधिकारियों के पास सांसदों के माइक बंद करने का कोई स्विच या रिमोट कंट्रोल नहीं होता। बिरला ने कहा, चेयर सिर्फ व्यवस्था या निर्देश देती है। जिस सदस्य का नाम पुकारा जाता है, उसे सदन में बोलने का मौका मिलता है।

चेयर के निर्देशानुसार माइक को नियंत्रित किया जाता है। चेयर पर बैठे व्यक्ति के पास माइक का स्विच या रिमोट कंट्रोल नहीं होता। उन्होंने कहा, यह चेयर की गरिमा का मामला है। कम से कम जो लोग चेयर पर बैठते हैं, उन्हें ऐसी आपत्तियां नहीं उठानी चाहिए। (के) सुरेश भी चेयर पर बैठते हैं। क्या चेयर के पास माइक का नियंत्रण है।

यहां के तांत्रिक गुरु उड़ने वाले घोड़े की सवारी करते थे

भगवान राम के चरणधूलि का सिद्ध स्थल घघरा सीतामढ़ी

प्राचीन ग्रंथों एवं इतिहासकारों के अनुसार छत्तीसगढ़ की भौगोलिक सीमाएं इतिहास के पन्नों के साथ बदलती रही है कभी यह इच्छ्वाकु वंश के राजा दंड का राज्य रहा है जो गंगा से लेकर गोदावरी तक राज्य करते थे लेकिन राजा दंड को उनके अक्षम्य अपराध की सजा देते हुए उनके ही गुरु शुक्राचार्य ने श्राप देकर उनका पूरा राज्य अग्नि और वर्षा से नष्ट कर दिया. समय बीतने के साथ यह विशाल क्षेत्र घनघोर जंगल में परिवर्तित हो गया. जिसे बाद में महाकातांर कहा जाने लगा. कालांतर में दानवराज मय ने इस महाकांतार प्रदेश को अपना आवास बना लिया और यहाँ दानवों की विशाल बस्ती बन गई. दंडक वन का यह क्षेत्र दानव मय के राज्य करने से सभी सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होता गया. दानव राज मय ने अपनी बड़ी पुत्री माया का विवाह उस समय के वीर असुर सम्राट शंबरासुर से कर दिया और दहेज में सरगुजा का उत्तरी हिस्सा अर्थात वर्तमान सामरी, कुसमी का राज्य दे दिया. इसमें वर्तमान मध्य प्रदेश उ.प्र., उड़ीसा एवं झारखंड का क्षेत्र भी शामिल था. अपनी दूसरी पुत्री मंदोदरी का विवाह उसने रावण से कर दिया और उसे बस्तर का भूभाग राज्य के लिए दे दिया. यह दोनों क्षेत्र दंडकारण्य के सीमावर्ती इलाके या दंडकारण्य मे शामिल क्षेत्र ही रहे हैं.

वीरेंद्र श्रीवास्तव

कोरिया बैकुंठपुर। दंडकारण्य का यह क्षेत्र प्राचीन ग्रंथों के अनुसार उस समय लगभग 35600 वर्ग मील में फैला हुआ था. वर्तमान सरगुजा के कोरिया एवं मनेन्द्रगढ़ (एमसीबी) जिले की प्राकृतिक वन- एवं जल संपदा तथा उँची नीची पहाडियों का सौंदर्य हमेशा से देवताओं को आकर्षित करता रहा है रामायण के शोधकर्ता डा. मन्नू लाल यदु के अनुसार यही कारण है कि देव एवं ऋषि मुनि इसी क्षेत्र में निवास करते थे. सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण दानवराज मय इस क्षेत्र पर अपना आधिपत्य जमाने की कोशिश करता रहा है इसी कोशिश में देवराज इंद्र के साथ शंबरासुर का युद्ध हुआ था जिसमें राजा दशरथ को भी देवताओं का साथ देने के लिए आमंत्रित किया गया था. कोरिया सीमा के सोन नदी के तट पर गिरीब्रिज नामक स्थान पर देवासुर संग्राम हुआ था, जिसमें राजा दशरथ घायल हुए थे और कैकई उन्हें बचा कर ले गई थी. इस युद्ध में शंबरासुर मारा गया लेकिन उसके सेनापति असुर तितर-बितर होकर भी अपना आतंक बनाए रखने के लिए ऋषि मुनियों के आश्रम पर आक्रमण करते रहते थे और आश्रमों के यज्ञ स्थल को नष्ट करते रहे. कैकई एक निपुण राज महिषी महिला थी उन्होंने इन्हीं राक्षसों को समाप्त करने का निश्चय कर लिया था. अपने पुत्र श्री राम की वीरता को वह जानती थी इसलिए राजा दशरथ द्वारा दिए गए वरदान के बदले भगवान राम को 14 वर्ष के वनवास भेजने के लिए वचनबद्ध करा लिया. जिससे असुर राक्षसों को समाप्त किया जा सके.

बनवासी भगवान श्री राम का वन गमन का कार्यकाल कहां-कहां कितने समय तक रहा. इस संबंध में शोधकर्ताओं एवं इतिहासकारों का अलग-अलग मत है जिसमें चित्रकूट के बिताए गए समय पर मतभिन्नता दिखती है. साहित्य मनीषी डॉ. मन्नू लाल यादव के अनुसार 14 वर्षों के समय काल का अधिकतर समय छत्तीसगढ़ में भगवान राम ने बिताया है. चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी को अयोध्या से छोड़ने के बाद वनवासी श्री राम- सीता आषाढ़ आते-आते तक छत्तीसगढ़ पहुंच चुके थे. वर्तमान छत्तीसगढ़ के उत्तरी छोर पर बसे मवई नदी के तट पर हरचौका ग्राम में सीतामढ़ी हरचौका का पत्थरों से निर्मित स्थल में उनका पहला पड़ाव था. किवदन्तियाँ हैं कि भगवान राम ने यहां पर चौमासा बिताया था वहीं कुछ अन्य शोधकर्ताओं का अनुमान है कि स्थल पर कुछ समय बिताने के बाद वनवासी श्री राम सीता एवं अपने छोटे भाई लक्ष्मण के साथ आगे बढ़कर घघरा सीतामढ़ी आश्रम पहुंचे थे जहां भगवान शिव की त्रिकाल संध्या आरती के लिए शिवलिंग की स्थापना कर आराधना की थी कुछ समय विश्राम कर वे आगे बढ़े और छतौरा आश्रम पहुंचे शोधकर्ता मन्नू लाल यदु के अनुसार बनवासी श्री राम ने यहां अपना चौमासा बिताया था. घनघोर जंगलों के बीच ऋषि मुनियों के आश्रम होने के कारण यहां राक्षसों की उपस्थिति की जानकारी इस आश्रम से मिल जाती थी. घनघोर भयावह जंगलों के बीच मुनियों के इस छपौरा आश्रम में भगवान राम एवं लक्ष्मण ऋषि मुनियों के साथ चर्चा कर राक्षसों के वध की योजना बना लेते थे.

केंद्र सरकार ने वर्ष 2015 में राम वन गमन मार्ग को जोड़कर आस्था एवं पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 2260 किलोमीटर का परिपथ चयनित किया है जो कई राज्यों से होकर गुजरेगा इन्हें अंकित करने के लिए पड़ाव केंद्र बनाए गए हैं छत्तीसगढ़ के इसी दंण्कारण्य में बनवासी भगवान श्री राम का सबसे लंबा वन गमन मार्ग रहा है. कोरिया, मनेंद्रगढ़ (एमसीबी) जिले के सीतामढ़ी हरचौका से लेकर कोंटा बस्तर सुकमा तक भगवान राम ने कुल 1100 किलोमीटर की लंबी यात्रा की है. विकास की योजनाओं को अंकित करने के लिए पड़ाव केंद्र बनाए गए हैं जिनका क्रमशः विकास किया जाना है इन्हीं पड़ाव केंद्र में सीतामढ़ी हर चौका को केंद्र क्रमांक 70 एवं रापा नदी के तट पर बसे बने घघरा सीतामढ़ी को केंद्र क्रमांक 71 तथा छपौरा आश्रम को 72 वां केंद्र विकास की दृष्टि से रेखांकित किया गया है. सीतामढ़ी घाघरा धाम के नाम से परिचित जंगलों के बीच रापा नदी के तट पर पत्थरों से निर्मित गुफा में प्राचीन काल के दो शिवलिंग की स्थापना की गई है जिसे भगवान राम के त्रिकाल संध्या आरती एवं पूजा हेतु शिवलिंग की स्थापना की मान्यता प्राप्त है. प्राचीन काल में शिवलिंग की जलहरी के चौकोर निर्माण की परंपरा थी जो रामायण काल में भी देखी जा सकती है. पत्थरों को काटकर बनाए गए इस आश्रम में भी चौकोर जलहरी के शिवलिंग की स्थापना इसे पुरातन एवं प्राचीनता की प्रमाणिकता से जोड़ती है. ग्राम पंचायत घघरा द्वारा पक्की सड़क का कुछ दूर तक निर्माण किया गया है लेकिन अभी भी कच्ची सड़क होने के कारण बरसात में यहां तक पहुंचाना कष्टकारी होगा. मंदिर के पास पहुंचने के बाद मंदिर के किनारे के हिस्से जो नदियों से जुड़ते हैं वहां लोहे की फेंसिंग लगाकर सुरक्षित मार्ग बना दिया गया है. इससे मंदिर का आकर्षक एवं सौंदर्य और बढ़ जाता है. कोरिया, एवं मनेन्द्रगढ़ (एमसीबी) जिले में अगले चरण में विकास के लिए सीतामढ़ी घघरा, कोटाडोल, सीतामढ़ी-छपौरा, का बाबा आश्रम, देवशील, रामगढ़, सोनभद्र और अमृत धारा के विकास की योजनाएं प्रस्तावित है. यह कब तक पूरी होगी यह वर्तमान सरकार के निर्णय और भगवान राम के प्रति निष्ठा पर निर्भर करता है.

यहां मंदिर के किनारे बहने वाली नदी का उद्गम 2 किलोमीटर ऊपर रापा ग्राम से है इसीलिए इसका नामकरण रापा नदी हुआ जो आगे बढ़कर बनास नदी को अपने जल सै समृद्ध करती है.यह पहाड़ी नदी होने के कारण बरसात के बाढ़ में अचानक पानी ऊपर चढ़कर मंदिर के पास तक पहुंच जाता है भगवान शिव को अपना जल अर्पण करने की ललक रापा में भी दिखाई पड़ती है. इसी नदी के ऊपर एक पुल का निर्माण किया जा रहा है ताकि बारिश के दिनों में इन पहुंच विहीन रास्तों में बसे राजस्व एवं वनग्राम तक पहुंच बनाई जा सके और मध्य प्रदेश के सीधी को जोड़ने वाले इस रास्ते के आसपास के ग्रामीणों को गुजर बसर करने की जीवन की आवश्यक सुविधा उपलब्ध कराई जा सके. इस पुल निर्माण के संबंध मे कोई जानकारी का बोर्ड नहीं होना (क्यों बोर्ड नहीं लगाया) जैसे कई प्रश्न खड़ा करता है. मध्य प्रदेश के सीधी को जोड़ने वाले इस रास्ते के आसपास के ग्रामीणों को गुजर बसर करने की जीवन की आवश्यक सुविधा उपलब्ध कराई जा सके. इस स्थल के ऊपर माँ अन्नपूर्णा के मंदिर में माथा टेक कर भी आप उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं. मंदिरों के बारे में आध्यात्मिक आस्था है कि सिद्ध मंदिर उसी स्थान पर बनते हैं जो सिद्ध स्थल होते हैं, हालांकि भगवान राम के चरण जहां पड़े हो वह अपने आप में सिद्ध स्थल है किसी ऋषि मुनि या संतों का यज्ञ हवन एवं पूजन पाठ का आश्रम यह भी रहा होगा.

सिद्धस्थलों की चर्चा मे यहां के वर्तमान पुजारी रामसखा आश्रम के संत श्री रामचंद्र महाराज जी ने इस संबंध में बताया कि इस स्थल की सबसे पहले खोज स्वामी अड़गड़ानंद ने की थी और यहां एक आश्रम बना दिया था. आश्रम के सामने यज्ञ स्थल के पास गड़ा हुआ स्तंभ (लाट) उन्हीं के द्वारा गाड़ा गया था जिस पर लहराता पताका उनके स्मृतियों का साक्षी है. वे स्वयं एक सिद्ध संत थे. संत रामचंद्र महाराज जी ने बताया कि किवदंतियां के अनुसार लगभग तीन सौ बर्ष पहले भी इस अंचल की भूमि मे सिद्ध संत रहे हैं. यहां से 3 किलोमीटर दूर सिद्ध चितावर आश्रम में तंत्र विद्या के कुशल साधक संत धनवंतरी धनातन गुरु निवास करते थे. जो अपनी सिद्धि के बल पर अपने घोड़े को हवा में उड़ाया करते थे और दूसरे संतो तक पहुंचने के लिए इसी उड़ने वाले घोड़े की सवारी करते थे. भयंकर जंगलों के बीच मित्र संतो तक पहुंचने का आवागमन इसी घोड़े द्वारा हवाई मार्ग से हुआ करता था. चितावर आश्रम के आसपास चितावर के जंगल है जिनकी लकडी तंत्र विद्या में काम आती है.

आयुर्वेद में भी इसका प्रयोग औषधि बनाने में किया जाता है. यहाँ घघरा सीतामढ़ी मे भगवान राम के चरण पड़े थे. उनके द्वारा स्थापित शिवलिंग मे जल चढ़ाने और उनका आशीर्वाद लेने से बढ़कर और बड़ा महत्व क्या हो सकता है. उन्होंने जानकारी दी कि सावन के पवित्र महीने में श्रद्धालुओं द्वारा सीतामढ़ी हर चौका तक पैदल चलकर जल चढ़ाने की योजना है जो इस वर्ष से ग्रामीणों द्वारा शीघ्र सावन मे प्रारंभ की जाएगी.

नवीन न्याय संहिता लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने का करेगी कार्यः कलेक्टर

पुलिस द्वारा ऑडिटोरियम में नवीन कानूनों के लागू होने के दिवस को भव्यता के साथ मनाया

सूरजपुर। आज 1 जुलाई 2024 सोमवार से देश में तीन नए आपराधिक कानून लागू हो गए है, जिससे भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली में दूरगामी बदलाव आएंगे। जिला पुलिस सूरजपुर के द्वारा नए कानून लागू होने के दिवस को जिला मुख्यालय स्थित ऑडिटोरियम में भव्यता के साथ मनाया। जिसमें जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी, अधिवक्ता, छात्र, मीडिया और गणमान्य नागरिकगण मौजूद रहे। शुभारंभ अवसर पर नवीन कानूनों के लागू होने के पश्चात कानूनों में होने वाले महत्वपूर्ण बदलाव से उपस्थित जनों को परिचित कराया गया और कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत के साथ किया गया। जिला मुख्यालय के अलावा जिले के सभी थाना-चौकी में नए कानून लागू होने पर भव्यता के साथ कार्यक्रम आयोजित किए गए।

इस अवसर पर कलेक्टर सूरजपुर श्री रोहित ब्यास (भा.प्र.से.) ने उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए कहा कि नवीन न्याय संहिता के अंतर्गत भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 व भारतीय साक्ष्य संहिता 2023 लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने का कार्य करेंगे। उन्होंने आगे कहा कि प्रत्येक नागरिक किसी न किसी प्रकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में कानून से जुडा होता है। इसलिए ये आवश्यक है कि हम सभी कानून में हुए बदलाव को अध्ययन करें व इसे समझे। उन्होंने कहा कि निश्चित ही नवीन न्याय संहिता से सभी को न्याय मिलेगा और समाज में सकारात्मक बदलाव आएगा। इसके साथ ही उपस्थित जनों को 3 नवीन कानूनों के लागू होने पर बधाई दी। इस दौरान उप पुलिस महानिरीक्षक एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरजपुर श्री एम.आर.आहिरे (भा.पु.से.) ने कहा कि बड़े हर्ष का विषय है कि आज के शुभ दिवस पर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) 2023 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम (बीएसए) 2023 आज से पूरे देश में प्रभावी हो गए हैं आज हम सभी इस दिवस को भव्यता के साथ मना रहे है। इन तीनों कानून ने ब्रिटिश कालीन कानूनों क्रमशः आईपीसी, सीआरपीसी व भारतीय साक्ष्य अधिनियम की जगह ली है। लागू हुए तीन कानून दण्ड से न्याय की ओर ले जाने वाला साबित होगा। आज से सभी नयी एफआईआर बीएनएस के तहत दर्ज की जाएंगी। नये कानूनों से एक आधुनिक न्याय प्रणाली स्थापित होगी जिसमें 'जीरो एफआईआर', पुलिस में ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराना, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम जैसे कि 'एसएमएस' (मोबाइल फोन पर संदेश) के जरिये समन भेजने और सभी जघन्य अपराधों के वारदात स्थल की अनिवार्य वीडियोग्राफी जैसे प्रावधान शामिल होंगे। इन कानूनों में कुछ मौजूदा सामाजिक वास्तविकताओं और अपराधों से निपटने का प्रयास होंगे और संविधान में निहित आदर्शों को ध्यान में रखते हुए इनसे प्रभावी रूप से निपटने का एक तंत्र मुहैया कराया गया है। दुष्कर्म पीड़िताओं का बयान कोई महिला पुलिस अधिकारी उसके अभिभावक या रिश्तेदार की मौजूदगी में दर्ज करेगी और मेडिकल रिपोर्ट सात दिन के भीतर देनी होगी। नये कानूनों में संगठित अपराधों और आतंकवाद के कृत्यों को परिभाषित किया गया है, राजद्रोह की जगह देशद्रोह लाया गया है और सभी तलाशी तथा जब्ती की कार्रवाई की वीडियोग्राफी कराना अनिवार्य कर दिया गया है। महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराधों पर एक नया अध्याय जोड़ा गया है, किसी बच्चे को खरीदना और बेचना जघन्य अपराध बनाया गया है और किसी नाबालिग से सामूहिक दुष्कर्म के लिए मृत्युदंड या उम्रकैद का प्रावधान जोड़ा गया है। 'ओवरलैप' धाराओं का आपस में विलय कर दिया गया तथा उन्हें सरलीकृत किया गया है और भारतीय दंड संहिता की 511 धाराओं के मुकाबले इसमें केवल 358 धाराएं होंगी। शादी का झूठा वादा करने, नाबालिग से दुष्कर्म, भीड़ द्वारा पीटकर हत्या करने, झपटमारी आदि मामले दर्ज किए जाते हैं लेकिन मौजूदा भारतीय दंड संहिता में ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए कोई विशेष प्रावधान नहीं थे। उन्होंने बताया कि भारतीय न्याय संहिता में इनसे निपटने के लिए प्रावधान किये गए हैं। इसके साथ ही आशा जताई की पुलिस विभाग योजनाबद्ध तरीके से नवीन कानून को अपनायेगा जिसके सकारात्मक परिणाम आमजन को दिखाई देगें। डीआईजी एवं एसएसपी सूरजपुर श्री एम.आर.आहिरे ने बताया कि नये कानूनों के तहत अब कोई भी व्यक्ति पुलिस थाना गये बिना इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम से घटनाओं की रिपोर्ट दर्ज करा सकता है। इससे मामला दर्ज कराना आसान और तेज हो जाएगा तथा पुलिस द्वारा त्वरित कार्रवाई की जा सकेगी। 'जीरो एफआईआर' से अब कोई भी व्यक्ति किसी भी पुलिस थाने में प्राथमिकी दर्ज करा सकता है, भले ही अपराध उसके अधिकार क्षेत्र में नहीं हुआ हो। इससे कानूनी कार्यवाही शुरू करने में होने वाली देरी खत्म होगी और मामला तुरंत दर्ज किया जा सकेगा। नये कानून में एक यह भी बदलाव है कि गिरफ्तारी की सूरत में व्यक्ति को अपनी पसंद के किसी व्यक्ति को अपनी स्थिति के बारे में सूचित करने का अधिकार दिया गया है। इससे गिरफ्तार व्यक्ति को तुरंत सहयोग मिल सकेगा। इसके अलावा, गिरफ्तारी विवरण पुलिस थानों और जिला मुख्यालय के पुलिस कन्ट्रोल रूम में प्रमुखता से प्रदर्शित किया जाएगा जिससे कि गिरफ्तार व्यक्ति के परिवार और मित्र महत्वपूर्ण सूचना आसानी से पा सकेंगे। पीड़ित को अधिक सुरक्षा देने तथा दुष्कर्म के किसी अपराध के संबंध में जांच में पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए पीड़िता का बयान पुलिस द्वारा ऑडियो-वीडियो माध्यम के जरिए दर्ज किया जाएगा। जिला मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम को डीएसपी मुख्यालय महालक्ष्मी कुलदीप, भाजपा जिला महामंत्री राजेश अग्रवाल ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संतोष महतो ने किया। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ कमलेश नंदिनी साहू, जनप्रतिनिधि राजेश्वर तिवारी, शशिकांत गर्ग, संदीप अग्रवाल, अजय अग्रवाल, आनंद सोनी, संस्कार अग्रवाल, रामकृष्ण ओझा, जिले के प्रशासनिक अधिकारीगण, पुलिस के अधिकारी-कर्मचारी, अधिवक्ता, छात्र, मीडिया और काफी संख्या में गणमान्य नागरिकगण मौजूद रहे।

दोपहिया वाहन चोरी करने वाले 3 चोर गिरफ्तार

छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में देते थे चोरी की घटना को अंजाम

एमसीबी। जिले के सिटी कोतवाली थाना मनेन्द्रगढ़ के अंतर्गत मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ से दोपहिया वाहनों को चोरी कर उसके फर्जी कागजात तैयार करके उसे सस्ते दामों में बेचने वाले 3 वाहन चोरों को गिरफ्तार कर लिया गया है। आरोपियों के कब्जे से 16 गाड़िया बरामद की गई है जिसकी कीमत लगभग 7 लाख 50 हजार रुपये आंकी गई है।

पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार 23 जून 2024 को प्रार्थी सतीश कुमार अग्रवाल आ. स्व. घनश्याम दास अग्रवाल उम्र 65 वर्ष निवासी विवेकानंद चौक मनेन्द्रगढ़ के द्वारा थाना सिटी कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराया गया था की वह अपनी स्कूटी मेस्ट्रो वाहन क्र. सी.जी.16 सी.जी. 1636 को घर के बाहर रखा था जिसे कोई अज्ञात व्यक्ति चोरी कर ले गया है। उसी प्रकार रेलवे कालोनी मनेन्द्रगढ़ निवासी सुभाष कुमार द्वारा 29 जून 2024 को थाना सिटी कोतवाली मनेन्द्रगढ़ में रिपोट दर्ज कराया गया की वह अपनी मोटर सायकल लिवो होण्डा को अपने घर के बाहर 20 अक्टूबर 2022 को खड़ा किया था जिसे कोई अज्ञात चोर चोरी कर ले गया है।

प्रार्थीगण की रिपोर्ट पर अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। मनेन्द्रगढ़ क्षेत्र में मोटरसाइकिल चोरी की घटना मे वृद्धि होने पर अज्ञात चोरो के विरूद्ध सख्त कार्यवाही के लिये पुलिस महानिरीक्षक सरगुजा रेंज सरगुजा एवं पुलिस अधीक्षक एमसीबी चन्द्रमोहन सिंह के निर्देश और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अशोक वाडेगांवकर के मार्गदर्शन, एसडीओपी अलेक्सियुस के नेतृत्व में विशेष टीम का गठन कर मोटरसाइकिल चोरी के अज्ञात आरोपियों की पतासाजी के दौरान घटना स्थल के आसपास के सीसीटीव्ही फुटेज को खंगाला गया जिसमे एक आरोपी स्कूटी को लेकर जाते दिखा। जिसके संबंध में पतासाजी करने पर मुखबिर से पता चला की मौहारपारा मनेन्द्रगढ़ का रहने वाला विकास कुमार कोल जो पिछले

02-03 सालो से मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ से मोटर सायकल को चोरी कर बिक्री कर रहा है। विशेष टीम के द्वारा काफी प्रयास के बाद आरोपी विकास कुमार कोल को हिरासत में लेकर पुछताछ करने पर उसके द्वारा विगत 02 वर्षो से (छ.ग.) एवं (म. प्र.) से ेपहिया वाहनों को चोरी करना और नम्बर प्लेट बदलकर सस्ते दामों में बेचना स्वीकार किया गया। आरोपी विकास कुमार कौल से कुल 09 नग दोपहिया वाहन एवं आरोपी के निशानदेही पर सुमित जैन उर्फ मेहूल जैन से 04 नग मोटर सायकल तथा निलेश लकड़ा से 03 नग मोटर सायकल कुल 16 नग दोपहिया वाहन कीमत लगभग 7,50000.00 (सात लाख पचास हजार रूपये) को जप्त कर आरोपियों को न्यायिक रिमाण्ड पर भेज दिया गया है।

सम्पूर्ण कार्यवाही में सिटी कोतवाली थाना प्रभारी निरीक्षक अमित कश्यप, उनि सतेन्द्र सिंह, कसउनि नईम अख्तर, सउनि मनीष तिवारी, सउनि चेतन राजवाडे प्रधान आरक्षक, इस्तियाक खान, पुष्कल सिन्हा, राकेश शर्मा, आरक्षक जितेन्द्र ठाकुर, भुपेन्द्र यादव, राकेश तिवारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

मवेशी चराने की बात को लेकर आरोपी ने दी थी हत्या की घटना को अंजाम

सूरजपुर। ग्राम दवना निवासी सोहन पण्डो ने थाना रामानुजनगर में रिपोर्ट दर्ज कराया कि 29 जून को यह अपने परिजनों के साथ जंगल गए थे, शाम को इसकी लड़की की चिल्लाने की आवाज सुनकर जंगल की ओर गया तो देखा पिताजी बुद्धु राम जमीन पर पड़े थे गांव का राम नारायण सिंह कुछ दूरी पर खड़ा था पिताजी को उल्टा सीधा बोल रहा था जिन्हें बैठाकर पानी पिलाने पर नहीं पिये और फौत कर गए। सूचना पर मर्ग कायम कर जांच की गई।

जांच के दौरान चश्मदीद गवाहों के कथन लिये गए। पीएम रिपोर्ट में डॉक्टर के द्वारा मृतक की मृत्यु गला दबाने से मृत्यु होना लेख करने पर आरोपी रामनारायण सिंह के विरूद्ध अपराध क्रमांक 115/24 धारा 302 भादसं. के तहत मामला पंजीबद्ध किया गया। मामले की सूचना पर उप पुलिस महानिरीक्षक/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरजपुर श्री एम.आर.आहिरे ने प्रकरण के आरोपी को जल्द गिरफ्तार करने के निर्देश दिए। थाना रामानुजनगर पुलिस ने मामले की विवेचना करते हुए दबिश देकर आरोपी रामनारायण सिंह पिता स्व. शोभनाथ सिंह उम्र 55 वर्ष ग्राम दवना को पकड़ा गया। पूछताछ पर आरोपी ने मवेशी चराने की बात को लेकर मृतक की गला दबाकर हत्या करना स्वीकार किया जिसे विधिवत् गिरफ्तार किया गया। कार्यवाही अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संतोष महतो व एसडीओपी प्रेमनगर नरेन्द्र सिंह पुजारी के मार्गदर्शन में नवपदस्थ थाना प्रभारी रामानुजनगर राजेन्द्र साहू, एएसआई मनोज पोर्ते, आरक्षक दीपक यादव, कृष्णा साहू, गजेन्द्र पाल व कौशलेन्द्र सिंह सक्रिय रहे।

सीएमओ और अध्यक्ष कर रहें हैं मनमानी-जगदीश मधुकर

एमसीबी। जिले के खोंगापानी के वार्ड नं 14 में स्थित नगर प्रवेश द्वार के नव निर्माण के मामले में नगर पंचायत के कांग्रेसी पार्षदों ने मुख्य नगरपालिका अधिकारी को ज्ञापन सौंपकर निर्माण कार्य पर रोक लगाये जाने और उचित कार्यवाही किये जाने की मांग की है। नगर पंचायत खोंगापानी के नेताप्रतिपक्ष, वार्ड क्र. 04 के पार्षद जगदीश मधुकर के नेतृत्व में कांग्रेसी पार्षदों ने सीएमओ को ज्ञापन सौंपा है। ज्ञापन में लेख किया गया है की वार्ड क्र. 14 के सीमा पर प्रवेश द्वारा पहले बना हुआ था जिसमें अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री स्व. बिसाहू दास महंत के नाम के साथ फोटो भी लगा हुआ था। इस कार्य को परिषद से पारित कर पूरा किया गया था लेकिन वर्तमान समय में आपके या अध्यक्ष के द्वारा उसे बदल दिया गया और भाजपा के नेताओं का फोटो लगवा दिया गया। इसके लिये ना तो परिषद में इस काम को पारित किया गया है और ना ही हम कॉंग्रेस के पार्षदों को किसी भी प्रकार की कोई जानकारी दी गई है। बिना जानकारी दिये प्रवेश द्वार को बदल देना कही ना कही यह दर्शाता है की साफ-साफ भेदभाव किया जा रहा है। इस काम से नाराज होकर कांग्रेसी पार्षदों ने नेता प्रतिपक्ष छत्तीसगढ़ विधानसभा डॉ. चरणदास महंत,सांसद कोरबा लोकसभा ज्योत्सना चरणदास महंत, जिला एमसीबी कलेक्टर डी. राहुल वेंकट, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व को भी प्रतिलिपि प्रेषित कर वार्ड क्र.14 में स्थित प्रवेश द्वार के संबंध में उचित कार्यवाही करने की मांग की है।

मौसमी फल जामुन के व्यवसाय से महिलाओं को मिल रहा है आर्थिक स्वावलंबन

रायपुर। गौरेला पेण्ड्रा मरवाही जिला अपने प्राकृतिक सौंदर्य और लघु वनोपजों के लिए मशहूर है। यहां के जंगलों में मौसमी फल जामुन, सीताफल , कटहल, मुनगा आदि भी बहुतायत रूप में उपलब्ध होते हैं। जामुन के फल से जिले की महिलाओं को काफी लाभ हो रहा है और वो इसके व्यवसाय से आत्मनिर्भर हो रही हैं और आर्थिक रूप से स्वावलंबन की दिशा में बढ़ रहीं है।

छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन बिहान के अंतर्गत महिला स्वसहायता समूह की अध्यक्ष श्रीमती जानकी ओट्टी पेण्ड्रा जनपद पंचायत के एक छोटे से गांव पंडरीखार में रहती हैं। वर्ष 2016-17 में समूह से जुड़कर शैलपुत्री नाम का समूह गठन किया। उन्होंने समूह में अपनी सक्रियता दिखाते हुये आंगनबाडी में रेडी टू ईट का काम करने लगी इससे उनको महीने में 10 से 12 हजार रुपये की मासिक आय होने लगी। जिले में बारिश के मौसम में जामुन बहुत अधिक होता है। समूह की महिलाओं ने मिलकर जामुन इक्ट्ठा कर जिले से बाहर बिक्रय करने की ठानी। उन्हें एक कैरेट जामुन में 600 रुपये तक मिल जाता है। वे प्रतिदिन विभिन्न समूहों की महिलाओं से 30 से 40 कैरेट एकत्रित कर बाहर भेजती हैं।

मिलावटी स्पंज आयरन के साथ वाहन छोड़कर चालक फरार

रायपुर। दो ट्रेलर में मिलावटी स्पंज आयरन लोड कर कंपनी में खड़ी कर चला गया। मामले में उरला पुलिस ने आरोपी के खिलाफ अमानत में ख्यानत का मामला दर्ज किया है। प्रार्थी दिनेश कुमार पांडे 47 वर्ष पटेलपारा कोरबा का रहने वाला है। प्रार्थी मां कुदरगढ़ी पावर एंड इस्पात कंपनी में कर्मचारी है। प्रार्थी ने थाना में शिकायत किया कि दो ट्रेलर से आरोपी भूषण व्यास ने झारसुगड़ा से स्पंज आयरन लोड कर आया और वाहन को कंपनी में खड़ी कर भाग निकला। जब माल को चेक किए तो वह मिलावटी निकला। प्रार्थी की शिकायत पर उरला पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा 406 के तहत अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

खाना बनाते महिला झुलसी, मौत

भिलाई-रायपुर। दो थाना क्षेत्र में आग लगने की घटनाएं सामने आई हैं। भिलाई-3 थाना क्षेत्र में गोबर के उपलों को जलाते समय महिला बुरी तरह झुलस गई। गंभीर हालत में उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं सुपेला थाना क्षेत्र में बीती रात शॉर्ट सर्किट से ऑटो पार्ट्स की दुकान में आग लगने से पूरा सामान जलकर राख हो गया। भिलाई-3 थाना पुलिस ने बताया कि चरोदा बस्ती में दाऊ रामकमल नारायण चौक के पास जागेश्वरी यादव नाम की महिला गोबर के उपलों में मिट्टी तेल डालकर चूल्हा जला रही थी। और आग अचानक ही भभक गई। इससे महिला आग की चपेट में आ गई। महिला की साड़ी में आग पकड़ लेने से वह बुरी तरह जल गई। आसपास मौजूद लोगों ने मुश्किल से आग बुझाया। इसके बाद उसे इलाज के लिए अस्पताल सुपेला लाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद महिला को जिला अस्पताल दुर्ग रेफर कर दिया गया।

प्रदेश में 1 से 3 तक कार्डधारियों को नहीं मिलेगा राशन

रायपुर। छत्तीसगढ़ में जुलाई के पहले सप्ताह में 3 दिन तक कार्डधारियों को उचित मूल्य की राशन दुकानों में खाद्यान्न नहीं मिलेगा. विभागीय डाटाबेस को नए क्लाउड सर्वर पर स्थानांतरित करने का कार्य 1 से 3 जुलाई तक किया जाएगा. इसके कारण तीन दिन तक प्रदेशभर की राशन दुकानों भी बंद रखी जाएंगी. खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उप. संरक्षण विभाग के अपर सचिव ने इस संबंध में 28 जून को आदेश जारी किया है.

इस आदेश के तहत प्रदेश के सभी कलेक्टरों को विभागीय डाटाबेस को नवीन क्लाउड सर्वर पर स्थानांतरित किए जाने की जानकारी दी गई है. वर्तमान में खाद्यान्न पोर्टल को छोड़कर सभी विभागीय ऑनलाइन कार्यवाही राज्य डाटा सेंटर में स्थित विभागीय सर्वर के माध्यम से किया जा रहा है. एसडीसी सर्वर में लगातार आ रही समस्याओं के निराकरण के लिए नवीन क्लाउड सर्वर एनआईसी माध्यम से किराए पर लिया गया है. इसमें विभागीय डाटाबेस को स्थानांतरित किया जाएगा. इसके कारण एसडीसी स्थित विभागीय सर्वर तीन दिन तक बाधित रहेगा।

अब नए साल से होगा रेलवे की समय सारणी में बदलाव

रायपुर। एक जुलाई से भारतीय रेलवे की नई समय सारिणी लागू करने के निर्णय को स्थगित कर दिया गया है। वर्तमान समय सारिणी को ही 31 दिसंबर तक विस्तार दे दिया गया है। अब नई समय सारिणी एक जनवरी से लागू होगी।

ट्रेनें पुराने समय नंबर, मार्ग और ठहराव पर यथावत चलती रहेंगी। रेलवे बोर्ड ने इस आशय का दिशा-निर्देश जारी कर दिया है। मंडल व जोन ने रेलवे बोर्ड को ट्रेनों के समय को लेकर प्रपोजल बनाकर दे दिया है। रेल मंत्रालय, बोर्ड और जोनल स्तर पर ट्रेनों के समय और ठहराव आदि की समीक्षा कर रहा है। समीक्षा के लिए रेलवे बोर्ड ने जुलाई और दिसंबर से लागू होने वाली नई समय सारिणी को स्थगित कर दिया है। समीक्षा पूरी नहीं हुई तो समय सारिणी लागू होने का समय और आगे भी बढ़ सकता है। देशभर में कवच सिस्टम स्थापित करने के साथ गति बढ़ाने के लिए ऑटोमेटिक ब्लॉक सिग्नल का कार्य तेजी से चल रहा है, जिस वजह से ट्रेन लगातार लेट हो सकती है। जानकारी के मुताबिक रेलवे प्रशासन ने नई ट्रेनों को समय सारिणी में शामिल करने व समय में सुधार की प्रक्रिया शुरू कर दी है। पिछले वर्ष एक अक्टूबर को लागू हुई थी।

रेलवे बोर्ड के निदेशक कोचिंग संजय आर नीलम ने सभी जोनल रेलवे को पत्र जारी कर कहा है कि वर्तमान समय सारिणी 31 दिसंबर तक प्रभावी रहेगी। एक जनवरी 25 से नई समय सारिणी लागू की जाएगी। रेलवे कनेक्टिंग ट्रेनों के यात्रियों के लिए दूसरे जोन की ट्रेनों को 5 से 10 मिनट तक जल्दी स्टेशन पहुंचने की मांग की गई है, ताकि एक ट्रेन के बाद दूसरी ट्रेन पकड़ने के लिए यात्रियों के पास पर्याप्त समय रहे। इस तरह वबर उत्तर रेलवे की मांग पर जोन की लंबी दूरी वाली ट्रेनों के समय में बदलाव देखने को मिल सकता है, जिसमें छत्तीसगढ़, सारनाथ और साउथ बिहार समेत सिकंदराबाद का रायपुर पहुंचने का समय पहले से जल्दी हो सकता है। रेलवे की समय सारिणी में जोन की पहली वंदे भारत ट्रेन के समय में बदलाव हो सकता है। बिलासपुर से नागपुर के बीच चलने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस के समय में आंशिक बदलाव होने की बात कही जा रही है।

युवा मोर्चा कार्यकर्ता करेंगे पुतला दहन

कोरबा। कांग्रेस नेता के द्वारा लोकसभा में हिन्दु हिंसक कहे जाने का भाजपा ने विरोध किया है। आज पूरे देश भर में युवा मोर्चा के कार्यकर्ता पुतला दहन करेंगे। आज शाम को टीपी नगर चौक में युवा मोर्चा के जिलाध्यक्ष पंकज सोनी के नेतृत्व में पुतला दहन किया जाएगा। जिसकी तैयारी प्रीति स्वर्णकार, नरेन्द्र बिझंवार ,सुभाष राठौर, दीक्षित देवांगन, दिनेश तिवारी, धनजंय चौहान , प्रकाश यादव, ब्रिजेश यादव, शुभभ हलवाई, पिंकु रंजन, नवीन देवांगन, दिनेश सेन सहित अन्य कार्यकर्ताओं के द्वारा की जा रही है।

खंभे टूटने से गांव में रहा अंधेरा

कोरबा। उमरेल फाटक के पास दो बिजली के खंभे अचानक टूट गए जिसके चलते ग्राम उमरेली सहित आसपास के गांव अंधेरे में डूब गए युवा मोर्चा के नेता नवीन देवांगन के द्वारा अधिकारियों को इसकी सूचना दी गई। तब कही जाकर बिजली तार को जोड़ने का काम शुरू किया गया। दो दिनों तक आसपास के गांव अंधेरे में डूबे रहे । लोगों को परेशानी होती रही । अब गांव वालो ने कार्य किए जाने पर हर्ष व्यक्त किया है।

20 रिटायर कर्मियों का सम्मान

कोरबा। पिछले दिनों गेवरा प्रोजेक्ट में कार्यरत कर्मचारियों के रिटार्यर होने पर उन्हें विदाई दी गई। अधिकारियों व कर्मचारियों के द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम के दौरान जेसीसी सदस्य शेख चंद मंसूरी , छंद राम राठौर जीवराखन चंन्द्रा, हरनारारायण केश्रवानी सहित अन्य सदस्य मौजुद थे। केन्द्रीय कर्मशाला कोरबा पूर्वमें भी अधिकारियों व कर्मचारियों ने रिर्टायर कर्मियों की विदाई दी। इस दौरान दिलीप सिंह राजेश पाण्डेय, राजेन्द्र यादव, भागवत साहू, संतोष टंडन सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

साधक परिवार का चैतुरगढ़ गुरूपूजन

कोरबा। सिद्ध आश्रम साधक परिवार के द्वारा कल चैतुरगढ़ में गुरूपूजन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान ए.वन कश्यप के द्वारा हवन पूजन के कार्यक्रम कराया गया। कोरबा से रजनीश रजवाड़े सहित अन्य साधकों ने भाग लिया इस आश्य की जानकारी देते हुए धनश्याम बरेठ ने बताया कि समय समय पर इस तरह के कार्यक्रम होते रहते है।

जड़ों के साथ छोड़ने से पेड़ गिर रहे लाइन पर, बिजली आपूर्ति बाधित

कई क्षेत्रों में समस्या, सुधार में जुटा अमला

कोरबा। रिकार्ड गर्मी झेलने के बाद अब बारिश की निरंतरता क्षेत्र के लिए सिरदर्द बनती जा रही है। भारी वर्षा के असर से कमजोर श्रेणी के पेड़ों का साथ जड़ों से छूट रहा है और वे अपनी पहचान खो रहे हैं। ट्रांसपोर्ट नगर सहित कई स्थान पर पेड़ों के उखड़कर गिरने से सीएसईबी की 11केवी लाइन क्षतिग्रस्त हो गई। जनहानि तो नहीं हुई लेकिन इस घटना से कई घंटे बिजली आपूर्ति ठप रही। सुधार के लिए मैदानी अमले को काफी मशक्कत करनी पड़ी।

ट्रांसपोर्ट नगर वार्ड क्रमांक 13 में महापौर राजकिशोर प्रसाद के मकान के सामने मुख्य मार्ग पर आज सुबह यह घटना हुई। खबर के मुताबिक यहां पर लगा हुआ गुलमोहर का भारी भरकम पेड़ एकाएक जड़ से उखड़कर गिर पड़ा। उसने दूसरी तरफ से गुजरी हुई सीएसईबी की लाइन को अपनी चपेट में लिया। 11केवी लाइन आपूर्ति के लिए डाली गई है जो

इस घटना से प्रभावित हुई। सुबह जिस समय यह घटना हुई, आवाजाही पूर्णत: शून्य थी। इससे संभावित अनहोनी टल गई। इलेक्ट्रिक लाइन टूटने के नतीजन जहां लाइन ट्रिप हो गई वहीं अगले ही क्षण बड़े हिस्से की आपूर्ति बाधित हो गई। तुलसी नगर उपकेंद्र से जुड़े कई फीडर पर इसका सीधा असर पड़ा और आपूर्ति के बाधित होने से अमले के सामने चुनौतियां पेश आईं। बताया गया कि महज एक घंटे के भीतर फ्यूज कॉल सेंटर पर 50 से अधिक लोगों ने इस बारे में जानकारी दी और आपूर्ति बहाल होने को लेकर पूछताछ की। खबर यह भी मिली है कि ट्रांसपोर्ट नगर के अलावा और भी कई हिस्सों में लाइन पर पेड़ गिरने जैसी समस्याएं आई है और बारिश के दौर में लोगों की मुसीबतों में विस्तार हुआ है। संबंधित क्षेत्रों से मिली सूचनाओं पर काम करते हुए सुधार संबंधी कोशिशें जारी रखी गई।

मशीनरी से काटकर हटाई बाधा

ट्रांसपोर्ट नगर क्षेत्र में धराशायी हुए भारी भरकम पेड़ को मौके से हटाने की प्रक्रिया के लिए बिजली कंपनी के मशीनरी का इस्तेमाल करना पड़ा। संबंधित क्षेत्र में पहले पेड़ को जड़ के करीब वाले हिस्से में काटा गया और फिर उसे कई हिस्सों में बांटने के बाद जेसीबी के जरिए वाहन में लोड किया गया। रिहायशी क्षेत्र होने के कारण कई प्रकार की समस्याएं इस काम को अंजाम देने में सामने आई। खबर के अनुसार इस इलाके में पेड़ गिरने की घटना से टेलीकॉम कंपनियों के अलावा निजी केबल कंपनियों के फाइबर केबल को भी काफी नुकसान हुआ है जो ऊंचाई से लगे हुए थे।

सरकारी और कार्पोरेट सेक्टर के चेक बेमतलब रोक रहा एक्सिस बैंक

परेशानी हो रहे ग्राहक

कोरबा। बैंकिंग सुविधाओं में बढ़ोत्तरी करने के साथ ग्राहकों को सहूलियत देने पर लगातार सरकार जोर दे रही है। राष्ट्रीयकृत और निजी बैंकों को इस कड़ी में बढ़ावा दिया जा रहा है लेकिन इससे यहां के एक्सिस बैंक प्रबंधन को कोई मतलब नहीं रह गया है। खबर के अनुसार सरकारी और कार्पोरेट सेक्टर से जुड़े हुए चेक को यहां अनावश्यक रोककर ग्राहकों को परेशान किया जा रहा है।

एक्सिस बैंक में सामान्य खातों के साथ-साथ सरकारी योजनाओं से संबंधित खातों का संचालन किया जा रहा है। वर्क लोड बढ़ने के साथ सुविधाओं को सरलीकृत करने और ग्राहकों को आसानी हो, इस तरफ विशेष ध्यान नहीं रह गया है। खबरों में बताया गया कि सरकारी और कार्पोरेट सेक्टर से प्राप्त चेक को इस बैंक में जमा करने और इन्हें आरटीजीएस की प्रक्रिया में लाने को लेकर बेमतलब विलंब किया जा रहा है। इस प्रकार के चेक दो से तीन दिन तक रोककर रखे जा रहे हैं। ऐसे में संबंधित पार्टियों के वित्तीय लेनदेन बेवजह विलंबित हो रहे हैं और उन्हें परेशान होना पड़ रहा है। मानसिक और आर्थिक समस्याएं इस मामले में खड़ी हो रही है। पीड़ितों का कहना है कि जब से कोरबा की एक्सिस बैंक स्थित शाखा में नए प्रबंधक की पदस्थापना की गई है, समस्याएं कुछ ज्यादा बढ़ गई हैं। पूछताछ करने पर लोगों को सकारात्मक जवाब तो नहीं मिल रहा बल्कि उल्टे कहा जा रहा है कि जिस स्तर तक जा सकते हैं, शिकायत कीजिए। बैंक प्रबंधन की यह प्रवृत्ति दर्शाति है कि आम ग्राहकों से जुड़े हितों से उसे कोई मतलब नहीं रह गया है। एक तरफ बैंकों को विश्वसनीय और पारदर्शी व्यवस्था के साथ जवाबदेह बनाने के लिए सरकार काम कर रही है, उस स्थिति में यहां की व्यवस्था अलग तस्वीर पेश करती है।

क्या है चार लाख की चोरी का सच, जांच जारी

कोरबा। सनसनीखेज घटनाक्रम में चार लाख रुपए कीमत के जेवरात रहस्यमय ढंग से पार हो गए। मामला नवधा राम पटेल पिता शांतिलाल पटेल 36 वर्ष, निवासी वार्ड नंबर 01, पटेल पारा थाना कोतवाली के घर का है। नवधा पटेल ने बताया कि 10 मई को पूरा परिवार विवाह में शामिल होने एक दिन के लिए ढोढ़ीपारा गया था। विवाह में शामिल होने के पश्चात् उसकी पत्नी द्वारा दो सेट सोने का हार, तीन सेट सोने का झुमका को अलमारी में सुरक्षित रख दिया गया था। इन समानों के साथ चांदी का सामान भी रखा हुआ था। अभी 25 जून को पुन: विवाह में बांकी मोंगरा जाना था तब पत्नी द्वारा आलमारी खोलकर देखने पर पता चला कि दो सेट सोने का हार, तीन सेट सोने का झुमका किसी के द्वारा ङ्क चोरी कर लिया गया है। चोरी गए सोने की कीमत लगभग 4,00,000 रुपये है। इस मामले में कुछ संदेहियों के नाम पुलिस को बताए गए हैं। नवधा राम पटेल की रिपोर्ट पर अज्ञात चोर के विरुद्ध धारा 380, 457 आईपीसी के तहत जुर्म दर्ज कर जांच की जा रही है। इस मामले में संदेहियों से पूछताछ की जाएगी।

हाथियों की मौजूदगी से बढ़ा खतरा

कोरबा। जिले के कोरबा एवं कटघोरा वनमंडल के केंदई, एतमानगर, जटगा व कुदमुरा रेंज में बड़ी संख्या में हाथियों की मौजूदगी से खतरा बढ़ गया है। क्षेत्र में लगातार हाथियों के विचरण करने से ग्रामीण दहशत में हैं।

मोतीसागर पारा में कचरा डम्प कर अमला बढ़ा रहा समस्या

कोरबा। नगर पालिक निगम का सफाई अमला मोतसागर पारा में सड़क किनारे कचरा डंप कर आने-जाने वाले लोगों के अलावा वार्ड वासियों की समस्या को बढ़ा रहा है। सड़क किनारे कचरा डंप किये जाने से आवारा पशु इसे बिखेर कर सड़क की ओर फैला दे रहे हैं, जिससे आवागमन में लोगों की दिक्कतें हो रही है साथ ही कचरे का सड़ांध भी क्षेत्र में फैल रहा है जिससे बरसात के मौसम में संक्रमण का खतरा बढ़ गया है। इसकी चपेट में आकर वार्डवासी व आसपास के रहने वाले लोग गंभीर बीमारी की चपेट में आ सकते हैं।

क्षेत्र के लोगों ने एक बार फिर यहां कचरा डंप किए जाने का विरोध करने का फैसला किया है। वार्डवासियों द्वारा पहले इसकी शिकायत निगम के उच्चाधिकारियों से की जाएगी फिर भी बात नहीं बनने पर उग्र कदम उठाया जाएगा। ज्ञात रहे वार्ड में निवासरत अधिवक्ता धनेश सिंह ने यहां पर कचरा डंप किये जाने से उत्पन्न समस्या को गत दिनों आयुक्त के संज्ञान में लाया था। जिस पर नगर निगम के सफाई अमले ने आयुक्त के निर्देश पर गंभीरता दिखाते हुए खुले में पड़े कचरे को तत्काल हटाया था। लगभग एक सप्ताह तक इस स्थान को साफ-सुथरा रखे जाने के बाद सफाई अमला ने फिर यहां कचरा डंप करना शुरू कर दिया है जिससे लोगों की परेशानियां बढ़ गई है।

नदी में डूबकर लापता हुआ व्यक्ति का शव मिला

कोरबा। मछली मारने के दौरान नदी में डूबकर लापता हुए एक व्यक्ति के जीवित बचने की संभावनाएं खत्म हो गई। आज उसका शव एक स्थान पर मिला है। पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बताया गया कि शंकर कंवर निवाासी देवरी मछली मारने के लिए सोमवार को पास की नदी में गया हुआ था। उसी दरम्यान वह हादसे का शिकार हो गया। उसके डूबने के बारे में स्थानीय व्यक्ति ने परिजनों को जानकारी दी, जिसके बाद पुलिस को अवगत कराया गया। थाना प्रभारी ने बताया कि इस मामले में गोताखोरों के जरिए तलाश कराई गई। कई घंटे के बाद ऑपरेशन बंद किया गया। आज सुबह एक जगह पर शव देखे जाने की खबर मिली। अगली कड़ी में मृतक की पहचान शंकर कंवर के रूप में कर ली गई। पोस्टमार्टम की प्रक्रिया के बाद शव परिजनों को सौंपा जाएगा।

खेतों को हुआ नुकसान, क्या एनटीपीसी देगा क्षतिपूर्ति?

कोरबा। जिले के धनरास स्थित एनटीपीसी के राखड़ बांध के विस्तार का काम जारी है। हालिया बारिश से अपने बांध को बचाने की चुनौती के बीच एनटीपीसी ने मौके पर जमा हुआ पानी तत्काल छोड़ दिया। इससे आसपास में स्थित कई किसानों के खेतों में पानी जा घुसा। उन्हें नुकसान हुआ है। सवाल उठ रहा है कि क्या इस मामले में एनटीपीसी प्रबंधन प्रभावित लोगों को क्षतिपूर्ति देगा भी?

सूत्रों ने बताया कि एनटीपीसी के राखड़ बांध क्षेत्र में जमा हुए पानी को बड़ी मात्रा में छोड़ने की कार्रवाई की गई। यह पानी बाद के निचले क्षेत्र में स्थित खेतों में जा घुसा। संबंधित खेत आसपास के किसानों के हैं। इनके जरिए किसानों की जीविका चलती है। किसानों का कहना है कि राखड़ बांध से छोड़ा गया पानी फ्लाईएश युक्त है। उसके साथ राखड़ की मात्रा भी आई ळे। पहले से ही कहा जा रहा है कि यह राखड़ कुल मिलाकर पर्यावरण से जुड़ी चीजों के लिए अनुकूल नहीं है। ऐसे स्थिति में तय है कि खेतों की उर्वरा क्षमता पर असर डाल सकती है और अगले खरीफ सीजन में बड़ा नुकसान हो सकता है। यह घटना ऐसे समय हुई जब खेतों में तैयारियां चल रही है। अगले कुछ दिनों में यहां बोनी और अन्य कार्य किये जाने हैं। इससे पहले हुए घटनाक्रम ने किसानों को परेशान किया है और उनकी चिंता बढ़ाई है। इसलिए मामले को लेकर स्वभाविक रूप से सवाल उठ खड़े हुए है कि जो कुछ मसला हुआ है, उस पर क्या एनटीपीसी प्रबंधन क्षतिपूर्ति देने पर विचार करेगा। दूसरी ओर एनटीपीसी के जनसंपर्क अधिकारी ने इस विषय पर बताया कि एनटीपीसी का राखड़ बांध सुरक्षित है और काम कर रहा है। इसकी ऊंचाई बढ़ाने के लिए पर्यावरण प्रबंधन से अनुमति लेकर काम कराए जा रहे हैं। इसमें मानक का ध्यान रखा गया है। लगातार इसकी पेट्रोलिंग का काम जारी है। शनिवार को भारी वर्षा होने पर राखड़ बांध को क्षति से बचाने के लिए संबंधित मार्ग से पानी को निकाला गया। इसका कुछ हिस्सा ग्रामीणों के खेतों में भर गया है। बताया गया है कि तटबंध में अधिकारी मौजूद रहते हैं। घटना के समय भी अधिकारियों की उपस्थिति थी। जनसंपर्क विभाग ने दोहराया कि प्रबंधन राखड़ बांध के चारों तरफ रहने वाले लोगों के हितों को लेकर प्रतिबद्ध है।

मुश्किल में सेकेंड एंट्री

कोरबा। रेलवे स्टेशन की सेंकेड एंट्री लोगों की सुविधा के लिए बनायी गई जो बारिश के सीजन में मुश्किल भरी हो गई है। मानिकपुर और एसईसीएल की तरफ से आने वाले रास्ते पर कीचड़ और पानी के भराव ने हलात खराब कर दिए है।

एसईसीएल की अस्पतालों में दवाईयां नहीं, बाहर से खरीदने की मजबूरी

कोरबा। कोल इंडिया के विभागीय चिकित्सालयों में पर्याप्त दवाएं (मेडिसिन) उपलब्ध नहीं होने की वजह से बाहर से कर्मियों को बाहर से खरीदना पड़ रहा है। इसका रिंबर्समेंट पूर्ण रूप से भुगतान नहीं किए जाने कर्मचारियों को आर्थिक रूप से नुकसान उठाना पड़ रहा है।

साऊथ ईस्टर्न कोलफिल्डस लिमिटेड (एसईसीएल) समेत कोल इंडिया लिमिटे्ड से संबद्ध कंपनियों में कार्यरत कर्मचारियों के लिए विभागीय तौर पर अस्पताल बनाया गया है। इन अस्पतालों में सभी सुविधाएं उपलब्ध कराए जाने की जिम्मेदारी प्रबंधन की है, पर कई अस्पताल में दवाओं की कमी बनी रहती है। इस संबंध में अखिल भारतीय खदान मजदूर संघ (बीएमएस) के अध्यक्ष व कोल इंडिया कल्याण मंडल के सदस्य टिकेश्वर सिंह राठौर ने सीआइएल चेयरमैन को पत्र लिख दवा की उपलब्धता कराने कहा है। उन्होंने कहा कि सीआइएल की विभिन्न सहायक कंपनियों के अस्पतालों के निरीक्षण के दौरान दवाईयां- औषधि की कमी मिली है। अधिकांश कंपनियों के पास दवाईयों औषधि की खरीद के लिए कोई वर्तमान दर अनुबंध नहीं था।

राठौर ने कहा कि जैम पोर्टल से दवा खरीदने का प्रक्रिया बहुत अच्छा नहीं है। दवा की आपूर्ति के लिए चार पीएसयु फार्मास्यूटिकल पंजीकृत है, लेकिन दवा की आपूर्ति के लिए आदेश देने के बाद भी अधिकांश समय में दवा की आपूर्ति करने में विफल रहते हैं। उन्होंने कहा कि रेट कांट्रैक्ट के माध्यम से खरीदी प्रक्रिया बहुत आसान है और जैम पोर्टल से कई गुना सस्ती भी है।

उन्होंने कहा कि रेट कांट्रैक्ट की वैधता कम से कम दो वर्ष या अधिकतम तीन वर्ष होनी चाहिए, इसे यथाशीघ्र शुरू किया जाना चाहिए। नई आरसी को अंतिम रूप दिए जाने के तुरंत बाद, अगली आरसी की प्रक्रिया शुरू की जानी चाहिए। दवा खरीद के लिए केंद्रीकृत रेट कांट्रैक्ट होना चाहिए और यह भी सहायक कंपनियों के लिए मान्य होना चाहिए।

सेल्टर केन्द्रों का जिम्मा एसई को

कोरबा। जिले में भारी वर्षा के मद्देनजर निगम विभिन्न क्षेत्रों में सेल्टर केन्द्र की स्थापना करेगा। जोन के प्रभारी अधिकारियों को इसकी जिम्मेदारी दी गई है। एसई स्तर के अधिकारी इसे देखेंगे।

अंतिम समय तक दायित्वों का निर्वहन करता है शिक्षक

कोरबा। शासकीय ग्राम्य भारती महाविद्यालय हरदी बाजार के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ आई के कौशिक के 41 वर्ष की सुदीर्घ सेवा के पश्चात सेवानिवृत्त होने के अवसर पर उनके सम्मान में विदाई समारोह का आयोजन किया गया, सन 1983 में ग्राम्य भारती विद्यापीठ की स्थापना के समय से डॉक्टर आई के कौशिक आज पर्यंत तक यहां अपनी सेवाएं दे रहे थे। ग्राम्य विद्यापीठ में दूसरे प्राध्यापक थे।

अपने उद्बोधन में उन्होंने निजी महाविद्यालय से शासकीय महाविद्यालय तक की रोचक और संघर्षपूर्ण यात्रा का वृत्तांत सुनाया। एक शिक्षक का दायित्व केवल संस्थान तक न होकर पूरा समाज होता है। सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी उसका पद समाज में बना रहता है क्योंकि वह अपने अंतिम समय तक अपने दायित्व का

निर्वहन करता है। इसलिए शिक्षक केवल संस्थान से मुक्त होता है ,अपने दायित्वों से वह सदैव बंधा रहता है।इसी क्रम में उन्होंने अपने समस्त पुराने और दिवंगत साथियों को याद किया। महाविद्यालय के समस्त अध्यापक एवं कर्मचारियों ने उन्हें गुलाल एवं माल्यार्पण से उनका स्वागत किया। महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य अखिलेश पांडे जी तथा डॉ अनिल पांडेय जी ने उन्हें सम्मान पत्र प्रदान किया। डॉ एम के वर्मा, डॉक्टर एस के मूर्ति ने शाल और श्रीफल देकर उनके स्वस्थ दीर्घायु जीवन की शुभकामनाएं दी,इसी तरह पन्नालाल सोन, मदन लाल गुरुद्वान, उत्तम दास महंत , बलदेव अहीर , प्रदीप पांडे ने महाविद्यालय की ओर से उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान कर उन्हें मंगलमय जीवन की शुभकामनाएं दी। हिंदी साहित्य परिषद के अध्यक्ष शिवम कुमार व कु नेहा साहू ने श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह देकर उनका सम्मान किया। हिंदी विभाग के भूतपूर्व छात्र मनमोहन राठौर, रश्मि,माधुरी ने उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका आशीर्वाद लिया।

प्रभारी प्राचार्य अखिलेश पांडे ने अपने उद्बोधन में डॉक्टर आई के कौशिक जी का उनके सुधार की सेवा के लिए उनका आभार व्यक्त करते हुए उनके मंगलमय जीवन की शुभकामनाएं प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन हिंदी के सहायक प्राध्यापक शिव कुमार दुबे ने किया विदाई सम्मान समारोह में शिक्षक गढ़ सहित छात्र, छात्राएं एवं स्टाफ उपस्थित रहे ।

स्वामी कौशल किशोर मिश्र की ओर से प्रकाशक, मुद्रक सुभाष अग्रवाल द्वारा आकाश आफसेट प्रिंटर्स से मुद्रित कर तिलक मार्ग, ट्रांसपोर्ट नगर, कोरबा से प्रकाशित, संपादक सुभाष अग्रवाल फोन: 221149, मो. : 9425224167 आर.एन.आई. पंजी. नं. 50254/89, ई-मेल tarunpresskrb@gmail.com